


स्वास्थ्य का अमूल्य खजाना मानव मूत्र

डॉ चंचलमल चोरडिया



शिवाम्बु घर का दवाखाना है, जहाँ प्रायः सभी रोगों की दवा उपलब्ध होती है। शिवाम्बु घर का अस्पताल है जहाँ अधिकांश रोगों का प्रभावशाली उपचार होता है। शिवाम्बु घर का डॉक्टर है क्योंकि उसमें रोग के अनुसार दवा का परामर्श देने का चिकित्सकीय गुण होता है। घर में ही रोग निदान केन्द्र है, क्योंकि शिवाम्बु उपचार करते समय रोग के निदान हेतु परीक्षणों की आवश्यकता नहीं होती। शिवाम्बु स्वयं द्वारा स्वयं के स्वास्थ्य का सुरक्षा कवच है, क्योंकि शिवाम्बु के सेवन से वायरस प्रभावहीन हो जाते हैं। वृद्धावस्था के लक्षण समय के पूर्व प्रकट नहीं होते। बच्चों को रोग निरोधक टीके लगाने की आवश्यकता नहीं होती।

प्रकाशक

कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट

आरोग्य आपका

प्रभावशाली-स्वावलम्बी-अहिंसक-मौलिक-निर्दोष-वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धतियाँ

- डॉ. चंचलमल चोरडिया

क्या है आरोग्य आपका पुस्तक में ?

निर्दोष प्रभावशाली चिकित्सा पद्धतियाँ

1. एकपुंजरा
2. चूचक
3. शिवाम्बू
4. सूर्य किरण
5. नृत्योक्त एकपुंजरा
6. नृत्योक्त विद्योत्त योगोद्घरण
7. ऊर्जा संतुलन
8. आध्यात्मिक चिकित्सा
9. योनी पंच तन्त्र चिकित्सा
10. रंग चिकित्सा
11. स्वर चिकित्सा
12. पेयो चिकित्सा
13. केल चिकित्सा
14. हास्य चिकित्सा
15. रिडोवाच चिकित्सा
16. नाभि चिकित्सा
17. दुग्धा चिकित्सा
18. यमिक शोधन चिकित्सा
19. योग चिकित्सा
20. ध्यान और स्वास्थ्य
21. जल और स्वास्थ्य
22. ज्वसन और स्वास्थ्य
23. सौर ऊर्जा और स्वास्थ्य
24. संतुलन और स्वास्थ्य

प्रभावशाली उपचार एवं विशेषताएँ

1. सहज, सरल, सस्ती, अहिंसक, स्वावलम्बी, बिना दवा, बिना चिकित्सक, शरीर विज्ञान की सामान्य जानकारी पर आधारित, बिना किसी दुष्प्रभाव, प्रभावशाली ढंग से स्वयं द्वारा स्वयं को शरीर को स्वस्थ रखने वाली पद्धतियाँ।
2. मधुमेह, हृदय रोग, दमा एवं अर्शियों जैसे असंस्थ रोगों का प्रभावशाली उपचार।
3. अन्तःस्रावी ग्रन्थियों, स्त्रीय डिस्क एवं हाडों सम्बन्धन संबंधित रोगों का सरलतम उपचार।
4. ऊर्जा संतुलन से कष्टग्र शरण।
5. आध्यात्मिक स्वास्थ्य की प्रदानता।
6. सूर्य दर्शन द्वारा भूख एवं रोगों से मुक्ति।
7. विज्ञान में सन, भाव एवं ज्ञानेन्द्रियों से प्रभावित समभाव तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी तत्वों की उपेक्षा नहीं।
8. रक्त शोधन की सरलतम विधि।
9. सही दवा के चयन एवं परीक्षण की विधि का विवेचन।
10. सही प्रकार के दर्दों, जलन, खुजली में तुरंत राहत।
7. खरादी, अनिद्रा, कब्ज, दस्त, ज्वरियों में तुरंत राहत पहुँचाने वाली।
8. अनेक श्रान्त चिकित्साओं का प्रभावशाली विकल्प।

मूलभूत सिद्धान्त

1. प्रकृति का समतन सिद्धान्त है कि जब समता होती है तबका समायोजन भी समतन पर होकर है।
2. यदि शरीर को किसी भाग में कोई तीव्र कठोर, सुई अथवा पिच चुभ जगह से उस समय न तो अहिंसक को अर्धों से अर्धक दुर्घटन देखना अर्थात् लगता है और न कानों को सन पराद परत सुनना। यहाँ तक कि दुर्घटनों पर से कबका लगने काल कागर मन क्षण मात्र के लिए अपना ध्यान बंद करिदुक्त कर देता है। किन्तु शरीर में इतना लालचन और अनुमान से, कम उस शरीर में कोई अर्धके समधारी रोग उत्पन्न हो सकता है।
जो शरीर अपनी कोशिकाएँ रक्त, घात, परत, हड्डियाँ, चर्बी, शीर्ष आदि अर्धकों का निर्माण स्वयं करता है। जिसे आध्यात्मिक चिकित्सक स्वास्थ्य विज्ञान की कोशिका के अतिरिक्त अन्य तत्व नहीं बना सकता। ऐसे स्वधारी, स्वनिर्णय, स्वनिर्धारित शरीर में स्वयं को रोगों को दूर करने को क्षमता नहीं, यह कीमती संघर्ष है?
3. शरीर का चिकित्सकपूर्ण एवं सजगता के साथ उपयोग करने की विधि स्वयंस्वामी जीवन की आधारशिला होती है। मानव की क्षमता, मज्जु और चिकित्सक जगत्त काल उत्पन्न होता है। उत्पन्न में रोगों की क्षमतीदारी मुक्त होती है। जिससे दुष्प्रभावों को संश्लेषणपूर्ण प्राप्ति नहीं। यह उपचार बाल-बूट, रिडोवाच-अतिरिक्त, सौर-अधारी, शरीर विज्ञान की विज्ञान जानकारी न रखने का समाधान अहिंसक भी अन्य विज्ञानों से स्वयं कर सकता है।
4. जैसे विचार चला करने की कला जानने काल विज्ञानों के उत्कर्षकों का उपयोग आसानी से कर सकता है। जो यह जानने की आवश्यकता नहीं होती कि विज्ञानों का अतिरिक्त विचारों का और काँट विचार? विचारों पर विज्ञानों की आती है? विज्ञान कोशिका, कोशिका और डिस्कमेंबी है? यह विचार चला करने को काल जानने काल उत्पन्न विज्ञानों का उपयोग कर सकता है। विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों की ऐसी सामान्य जानकारी से अधिक स्वयं न काल स्वयं आपकी समझ ही रख सकता है, अर्थात् आत्मसे आत्म रोगों का विचार किसी दुष्प्रभाव प्रभावशाली ढंग से उपचार भी कर सकता है।

मौलिक चिकित्सा कौनसी ?

स्वावलम्बी या परावलम्बी। सहज अथवा दुर्लभ। सरल अथवा कठिन, सस्ती अथवा महंगी। प्रकृति के समतन सिद्धान्तों पर आधारित प्राकृतिक या नित्य बदलते मापदण्डों वाली अप्राकृतिक। अहिंसक अथवा प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा, निर्दयता, क्रूरता को बढ़ावा देने वाली। दुष्प्रभावों से रहित अथवा दुष्प्रभावों वाली। शरीर की प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाने वाली या कम करने वाली। रोग का स्थायी उपचार करने वाली अथवा क्षणिक राहत पहुँचाने वाली। सारे शरीर को एक इकाई मानकर उपचार करने वाली अथवा शरीर का टुकड़ों-टुकड़ों के सिद्धान्त पर उपचार करने वाली। उपयुक्त मापदण्डों के आधार पर हम स्वयं निर्णय करें कि कौनसे चिकित्सा पद्धति मौलिक है और कौनसी चिकित्सा पद्धति वैकल्पिक?

अध्यात्म से शून्य स्वास्थ्य विज्ञान अपूर्ण

भौतिक विज्ञान का आधार होता है, जिसे दिखाया जा सके, जो मापा जा सके, जो प्रयोगों, परीक्षणों से प्रमाणित किया जा सके। ऐसे परिणाम जो तथ्य, तर्क एवं आंकड़ों से लिपिबद्ध किये जा सकें। जिसका आधार, निरीक्षण, विश्लेषण, निश्चित प्रक्रिया पर आधारित व्यवस्थित आंकड़ों द्वारा संकलित एवं प्रमाणित हों। जिसका उपयोग, संचालन, नियंत्रण प्रायः व्यक्ति स्वयं अथवा अन्य कोई व्यक्ति द्वारा निश्चित विधि का पालन कर बिना किसी बाह्य भेदभाव कहीं भी कर सकता है। आध्यात्मिक विज्ञान का आधार होता है स्वावलम्बन अधात् स्वयं के द्वारा स्वयं का निरीक्षण, परीक्षण, नियंत्रण, संचालन। उसका परिणाम होता है आत्मानुभूति। भौतिक विज्ञान व्यक्ति को विशिष्ट बनाता है, जबकि आध्यात्मिक ज्ञान मानव को स्वाभाविक बनाता है। भौतिक विज्ञान प्रयोग में विश्वास करता है, जबकि अध्यात्म विज्ञान योग में। विज्ञान शक्ति की खोज करता है, जबकि अध्यात्म शानति की। भौतिक विज्ञान पर आधारित होती है - परावलम्बी चिकित्सा पद्धतियाँ, जबकि प्रकृति के समतन सिद्धान्तों पर आधारित होती है - स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियाँ।

स्वास्थ्य का अमूल्य खजाना : मानव मूत्र

सभी रोगों की एक दवा:-

दुनियाँ में रोग मुक्त करने के लिए हजारों दवाईयाँ उपलब्ध हैं, जिनका रोगों की रोकथाम उपचार एवं परहेज के रूप में सेवन किया जाता है। सभी दवाओं का शरीर के अंगों पर अपना अलग-अलग प्रभाव अथवा दुष्प्रभाव पड़ता है। आँख के रोगों की दवा कान में नहीं डाली जा सकती। नाक में डालने वाली दवा मुँह से नहीं ली जा सकती, पीने वाली दवा त्वचा पर नहीं लगायी जा सकती। परन्तु शिवाम्बु स्वयं के द्वारा स्वयं के शरीर से उनके रोगों की आवश्यकतानुसार निर्मित ऐसी दवा है, जिसका उपयोग चाहें कान हों या आँख, नाक हों या मुँह, सिर दर्द हो या दाँतों का दर्द, त्वचा के रोग हो अथवा पेट या प्रजनन सम्बन्धी शरीर के रोग ही क्यों न हों, सभी में स्वस्थ रहने हेतु बेहिचक प्रयोग में लिया जा सकता है। अतः शिवाम्बु को अमरौली अथवा अमृत कहा जाए तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सात्त्विक आहार-विहार, आचार-विचार, श्रद्धा, धैर्य एवं प्राकृतिक नियमों के साथ शिवाम्बु का विधिवत उपचार करने से अन्य प्रचलित चिकित्साओं की अपेक्षा एड्स, कैंसर, हृदयघात, पक्षाघात, गैंगरिन, मधुमेह, दमा, प्रजनन, मोटापा, त्वचा संबंधित विभिन्न रोगों में चन्द अपवादों को छोड़कर शीघ्र एवं चमत्कारिक परिणाम आते हैं। स्वमूत्र बिना अन्य कोशिकाओं को हानि पहुँचाये, कैंसर की कोशिकाओं को प्रभावहीन करता है। कैंसर को बढ़ने से रोकता है, परन्तु यदि कैंसर हो भी गया हो तो उससे भी मुक्ति दिलाता है। रक्त को पतला कर रक्त वाहिनियों में जमे, कोलस्ट्रॉल की सफाई कर हृदयघात एवं पक्षाघात जैसे रोगों को ठीक करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिवाम्बु का सेवन करने से पोलियो, चेचक, प्लेग जैसी बीमारियों के वायरस प्रभावहीन हो जाते हैं। नवीन कोशिकाओं का सृजन होने लगता है। शिवाम्बु अतिरिक्त चर्बी को दूर कर मोटापा कम करने में, प्रजनन क्षमता सुधारने, तनाव कम करने, मानसिक संतुलन स्थापित करने, त्वचा को मुलायम रखने, किसी कारण से शरीर में फैले विष के प्रभाव को दूर करने, घावों को शीघ्र भरने, वात-पित्त और कफ का शरीर में आवश्यक संतुलन बनाने में मदद करता है। इसके सेवन से सकारात्मक सोच विकसित होती है। मांसाहारी शाकाहारी होने लगते हैं। दुर्व्यसनों से मुक्ति मिलने लगती है। अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के स्राव आवश्यकतानुसार निर्मित होने लगते हैं। नेत्र ज्योति सुधरती है। सारे जोड़ बराबर कार्य करने लगते हैं। सूजन नहीं आती और यदि पहले से आयी हुई हो तो दूर हो जाती है। शिवाम्बु पान से शुक्राणु बढ़ते हैं, महिलाओं में मासिक नियमित होती है। अनिद्रा का रोग ठीक होता है। शरीर में स्फूर्ति रहती है। जन्मजात शारीरिक या मानसिक अपूर्णता, दुर्घटना अथवा शल्य चिकित्सा के पश्चात् उत्पन्न अंग विच्छेदन स्थिति, अन्य उपचार के दुष्प्रभाव से उत्पन्न विकृत अवस्था, फ्रेक्चर और कर्मजन्य रोगों के अतिरिक्त प्रायः अधिकांश रोगों में शिवाम्बु उपचार लाभप्रद होता

है। अर्थात् शिवाम्बु अधिकांश दवाओं का प्रभावशाली विकल्प है।

मानव शरीर स्वयं में परिपूर्ण-

मानव शरीर अपने आप में परिपूर्ण होता है। इसमें अपने आपको स्वस्थ रखने की क्षमता होती है। प्रकृति बालक के जन्म के साथ ही पालन-पोषण के लिए माता के स्तन में दूध प्रदान करती है, ठीक उसी प्रकार जीवन भर स्वास्थ्य रक्षा एवं रोग निवारण के लिए शरीर में मूत्र उपलब्ध कराती है। प्रकृति का सनातन सिद्धान्त है कि जहाँ समस्या होती है उसका समाधान उसी स्थान के समीप अवश्य होता है। स्वास्थ्य के लिए हमारे शरीर में समाधान है, प्रकृति में समाधान है, वातावरण में समाधान है। समाधान भरे पड़े हैं परन्तु उस व्यक्ति के लिए कोई समाधान नहीं जो अपनी क्षमताओं से अपरिचित हो एवं जिसमें सम्यक् चिन्तन, समझ एवं सजगता का अभाव हो। अतः जो रोग शरीर में पैदा होते हैं उनका उपचार शरीर में उपलब्ध साधनों में अवश्य होना चाहिए। प्रत्येक अच्छे स्वचालित यंत्र में खतरा उपस्थित होने पर स्वतः उसको ठीक करने की व्यवस्था प्रायः होती है। हमें चिन्तन करना चाहिए कि जो शरीर अपनी कोशिकाओं, रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियों, चर्बी, वीर्य आदि अवयवों का निर्माण स्वयं करता है, जिसे आधुनिक विकसित विज्ञान अपने पूर्ण प्रयास के बावजूद भी नहीं बना पाया। ऐसी मानव शरीर रूपी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ, स्वचालित, स्वनियन्त्रित, प्रकृति द्वारा निर्मित मशीन में स्वयं के रोगों की सुरक्षा एवं उपचार की व्यवस्था न हो, कैसे संभव हो सकता है? प्रकृति के कानून सनातन होते हैं। किसी की दुआ, इच्छा, कामना, अभिशाप उसे बदल नहीं सकते।

स्वमूत्र चिकित्सा की पौराणिकता-

स्वमूत्र स्वयं के पास उपलब्ध दुनिया की सबसे पुरानी औषधि है। गर्भावस्था में गर्भस्थ बालक का पोषण मूत्र से ही होता है। डामर तंत्र में शिवजी ने पार्वती जी को स्वमूत्र के लाभ एवं उपयोग के बारे में विस्तार से समझाया। जो अनुभूतिपरक सनातन सत्यों पर आधारित है। इसी कारण स्वमूत्र को शिवाम्बु भी कहा जाता है। मानव मूत्र को प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथ सुश्रुत, भाव प्रकाश, योग रत्नाकर, हरित संहिता, अष्टांग हृदय, भेषज रत्नावली, राजनिघंटु, निघंटु रत्नाकर, सोढल-निघंटु, गज निघंटु, धन्वन्तरी निघंटु, मदनपाल-निघंटु, चरक संहिता आदि में इसे अमृतवत, सर्वगुण सम्पन्न, सर्व रोग नाशक, विषध्न, कफग्न, कृमिघ्न, वातघ्न, नेत्र एवं चर्म रोगनाशक के रूप में वर्णित किया गया है। हमारे ऋषि मुनियों ने शोध कर इसे पोषक, पाचक एवं रेचक योग्य बतलाया। पुराने ध्यान साधक साधना से पूर्व एवं साधनाकाल में शरीर को स्वस्थ रखने एवं अपनी शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए शिवाम्बु का सेवन करते थे। पर्वतारोही, समुद्र में भटकने वाले नाविक, युद्ध के मैदान में सैनिक, रंगिस्तान में भटके हुये राही जहाँ कहीं पीने योग्य पानी उपलब्ध न हो, ऐसी विषम परिस्थितियों में स्वमूत्र पीकर न केवल अपने जीवन को बचाते हैं अपितु शारीरिक कमजोरी से भी सुरक्षित हो जाते हैं। भविष्य में चन्द्रमा एवं अन्य ग्रहों की यात्रा करने वालों के लिए शिवाम्बु का जीवन रक्षक जल के रूप में उपयोग हो सकता है।

शिवाम्बु विश्वसनीय पारिवारिक चिकित्सक-

जिस प्रकार फैमेली डॉक्टर को परिवार के सदस्यों के खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार एवं जीवन शैली तथा रोग की पूर्व अवस्था की सामान्य जानकारी होती है। बार-बार परीक्षण कराने की आवश्यकता नहीं होती। किसको कौनसी दवा एवं उपचार प्रभावशाली होता है, अन्य चिकित्सकों की अपेक्षा अधिक जानकारी होती है। शिवाम्बु उपचार में चिकित्सक द्वारा गलत दवा चयन की संभावना नहीं रहती। जैसे स्विच चालू करने की विधि जानने वाला बिजली के उपकरणों का उपयोग आसानी से कर सकता है, उसे यह जानने की आवश्यकता नहीं होती कि बिजली का आविष्कार किसने, कब और कहाँ किया? बिजलीघर में उसका उत्पादन कैसे होता है और स्विच तक बिजली कैसे आती है? कितना वोल्टेज, करेण्ट और फ्रिक्वेंसी है? मात्र स्विच ऑन करने की कला जानने वाला उपलब्ध बिजली का उपयोग कर सकता। वर्ष में 365 दिनों 360 दिन उसे अंधेरे से उजाले में आने हेतु तकनीशियन को बुलाने की आवश्यकता नहीं होती। ठीक उसी प्रकार शिवाम्बु चिकित्सा की सामान्य जानकारी रखने वाला न केवल अपने आपको स्वस्थ ही रख सकता है अपितु 90 प्रतिशत से अधिक रोगों का उपचार बिना किसी दुष्प्रभाव एवं बिना चिकित्सक के मार्ग दर्शन स्वयं कर सकता है। इस प्रकार शिवाम्बु विश्वसनीय, पारिवारिक चिकित्सक के रूप में कार्य करता है।

शिवाम्बु घर का अस्पताल-

अस्पताल में सभी रोगों का उपचार होता है। अस्पताल में रोग का निदान, चिकित्सकीय परामर्श एवं उनके मार्गदर्शन में रोगों का उपचार होता है। ठीक उसी प्रकार स्वमूत्र में रोगी की आवश्यकतानुसार अधिकांश घटक होते हैं। अतः उसका उपचार प्रायः घर में ही हो जाता है। उपचार हेतु न तो घर के बाहर किसी अस्पताल में जाकर किसी चिकित्सक के परामर्श की आवश्यकता होती है और न किसी भी प्रकार के निदान एवं परीक्षणों की। शिवाम्बु अस्पताल के सभी कार्यों एवं मापदण्डों पर खरा उतरता है। अतः शिवाम्बु को घर का अस्पताल कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं।

शिवाम्बु घर का दवाखाना (Medical Store)-

दवाखाने में सभी रोगों की दवाइयें मिलती हैं। शिवाम्बु तो सभी रोगों की एक ही दवा है। शरीर में कोई भी रोग क्यों न हो, प्रायः उसकी आवश्यकतानुसार रोग मुक्ति हेतु दवा का कार्य शिवाम्बु करने में सक्षम होता है। अतः इसकी तुलना घर में ही दवाखाने से की जा सकती है।

स्वयं के रोगों का सुरक्षा कवच : शिवाम्बु-

शिवाम्बु के एक प्रमुख घटक यूरिया में पोलियाँ और रेबीज जैसे रोगों के कीटाणुओं को तुरन्त प्रभावहीन करने की क्षमता होती है। शिवाम्बु एण्टीबायोटिक होने के कारण वायरस से शरीर के होने वाले रोगों के लिए, सुरक्षा कवच की तरह कार्य करता है। जन्म से छोटे बालक को शिवाम्बु की चंद बूंदें पिलाने से उसे रोग निरोधक टीके लगाने की आवश्यकता नहीं होती।

नियमित शिवाम्बु पान करने वालों के वायरस से होने वाले रोगों के होने की संभावनाएँ नगण्य हो जाती है। चंद वर्षों पूर्व भारत में चिकनगुनिया, स्वायन फ्लू, डेंगू, एन्थेक्स जैसे रोग फैले। परन्तु शिवाम्बु साधक को ये रोग प्रभावित न कर सके। मानव मूत्र में सभी प्रकार के विष को बिना किसी दुष्प्रभाव शमन करने की क्षमता होती है। सर्प, बिच्छू, पागल कुत्ते, चुहे, मधुमक्खी आदि के काटने पर शिवाम्बु उपचार तुरन्त लाभ पहुँचाता है। शिवाम्बु शक्तिवर्धक रसायन की भांति कार्य करता है। इसी कारण स्वमूत्र पान कर लम्बे उपवास करना अपेक्षाकृत सरल होता है। शिवाम्बु न केवल रोगों का उपचार ही करता है अपितु व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रखने में भी मदद करता है। युद्ध के मैदान में अथवा दूर दराज क्षेत्रों में जहाँ अन्य उपचार सुविधाएँ उपलब्ध न हो, प्रायः शिवाम्बु द्वारा ही सभी रोगों का उपचार किया जाता है। तपस्या, ध्यान में साधना से पूर्व साधक को स्वमूत्र सेवन करने से उसकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमता बढ़ने लगती है। शरीर के शुद्ध होने से मन की शुद्धि आसान हो जाती है। जैन साधुओं द्वारा अपने बालों का लोच करते समय और उसके पश्चात् शिवाम्बु लगाने से दर्द कम होता है तथा रूहतोड़ (बाल का टूटने से होने वाला घाव) जैसे अन्य दुष्प्रभाव नहीं होते।

स्वमूत्र पान से दर्द को सहन करने की क्षमता बढ़ती है। इसी कारण जब अपराधियों को पुलिस दण्ड देती है, वे स्वमूत्र पी लिया करते हैं। शिवाम्बु द्वारा रोगोपचार के साथ स्वाध्याय, ध्यान, भक्ति, प्रार्थना आदि प्रवृत्तियों से उसकी प्रभावशालीता बढ़ जाती है। आज सैकड़ों आधुनिक चिकित्सा विशेषज्ञ, राजनेता, फिल्म अभिनेता, शिक्षाविद् अपने स्वास्थ्य हेतु स्वमूत्र का पान कर रहे हैं। जिस घर में स्वमूत्र चिकित्सा को पारिवारिक चिकित्सा के रूप में मान्यता मिल जाती है अर्थात् सभी परिजन अपना लेते हैं, वह परिवार बड़ा भाग्यशाली होता है। उस घर में चिकित्सकीय खर्च बंद हो जाता है, उपचार हेतु समय का दुरुपयोग समाप्त हो जाता है। घर के बालक-बालिका, प्रोढ़-जवान सभी रोग मुक्त हो दीर्घायु को प्राप्त करते हैं। शिवाम्बु का विधिवत् उपयोग करने वालों को दवाईयों एवं दुर्व्यसनों से मुक्ति मिलती है, जो अच्छे स्वास्थ्य हेतु आवश्यक है।

समान लक्षणों वाले दो रोगी एक जैसे नहीं होते-

प्रत्येक व्यक्ति में रोग का परिवार अलग-अलग होता है। बाह्य रूप से कुछ लक्षणों में समानता होने के बावजूद प्रत्येक व्यक्ति का खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, आवास-प्रवास, आयु, व्यवसाय, कर्तव्य, जिम्मेदारियाँ, रुचि, स्वभाव, सहनशक्ति, सोच, शारीरिक और मानसिक क्षमता, पारिवारिक एवं सामाजिक रीति-रिवाज, धार्मिक संस्कार और मान्यताएँ, मौसम की स्थिति और बदलाव, सहयोगी एवं द्वेषी लोगों का योग आदि दैनिक जीवन में अनेकों कारण होते हैं जो रोग से संबंधित होते हैं। परन्तु आधुनिक रोग के परीक्षणों में उनकी उपेक्षा होती है। अतः उसके उपचार हेतु ली जाने वाली दवा भी अलग-अलग होनी चाहिए। जो कारखानों में बनी दवाओं के लिए संभव नहीं। प्रत्येक व्यक्ति के स्वमूत्र में उसके शारीरिक, मानसिक, आत्मिक रोगोपचार हेतु आवश्यकतानुसार जीवनोपयोगी पदार्थ होते हैं। उसके घटक

रोग एवं रोगी की अवस्था अनुसार बदलते रहते हैं। अर्थात् स्वमूत्र स्वयं के लिए स्वयं के शरीर द्वारा निर्मित औषधि है। अतः उसमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोगों से उत्पन्न अनावश्यक विजातीय तत्त्वों को शरीर से अलग करने का गुण होता है। शरीर से बाहर आने तक किसी बाह्य पदार्थ से इसका सम्पर्क नहीं होता। अतः इसमें किसी भी प्रकार की मिलावट की संभावना नहीं रहती है और न ही इसके बाजार से गायब होने का डर, जो अन्य दवाओं में संभव है। इस कारण शिवाम्बु चिकित्सा अन्य उपचार पद्धतियों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय एवं प्रभावशाली होती है।

दुनिया में जब दो व्यक्ति एक जैसे नहीं हो सकते, तब दो रोगियों का उपचार और उनका निदान एक जैसा कैसे हो सकता है? वास्तव में आज लक्षणों के आधार पर जिन रोगों का नामकरण किया जाता है, वे अनेक रोगों के समूह के नेता की भाँति होते हैं। जिन्हें सैकड़ों अप्रत्यक्ष रोगों का सहयोग प्राप्त होता है। जनतन्त्र में नेता को हटाने का सरलतम उपाय है कि उसके सहयोगियों को उनसे अलग करना। सहयोगियों को अलग किये बिना नेता को हटाना सरल नहीं होता। ठीक उसी प्रकार निदान करते समय, यदि अप्रत्यक्ष रोगों की उपेक्षा करें तो, निदान और उस पर आधारित उपचार आंशिक अथवा अधूरा ही होता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति का मूत्र उसके शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक स्थिति के अनुरूप अलग-अलग होता है। उसके घटक रोगी एवं रोग की स्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। अतः उसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोगों से उत्पन्न विजातीय तत्त्वों को शरीर से अलग करने का गुण होता है। इस कारण शिवाम्बु चिकित्सा से मुख्य रोग के साथ-साथ सभी परोक्ष रोग भी दूर हो जाते हैं। अतः यह चिकित्सा अन्य उपचारों से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली होती है।

अच्छी चिकित्सा पद्धति : शिवाम्बु-

अच्छी चिकित्सा पद्धति सहज, सरल, सस्ती, स्वावलंबी, सर्वत्र, सभी समय उपलब्ध, अहिंसक, प्रभावशाली एवं स्थायी उपचार वाली होती है, जिसमें किसी भी प्रकार के दुष्प्रभावों की संभावना नहीं होती, जो रोग में न केवल राहत ही देती हो अपितु विधिपूर्वक की जावे तो चन्द दिनों में ही स्थायी समाधान करने में सक्षम होती है। जिसको बालक, वृद्ध, महिला, पुरुष, शिक्षित-अशिक्षित, शरीर विज्ञान की विशेष जानकारी के बिना भी व्यक्ति सभी रोगों के उपचार हेतु आत्म विश्वास के साथ अपना सकता है। स्वमूत्र चिकित्सा पद्धति में न तो रोगी की नाड़ी देखनी पड़ती है और न ही एक्स-रे अथवा एम.आर.आई., सीटी स्कैन अथवा सोनोग्राफी आदि कराने पड़ते हैं न थर्मामीटर लगाना पड़ता है और न दवाओं अथवा उससे बने इंजेक्शनों के लगाने की भी आवश्यकता होती है। स्वस्थ एवं रोगी दोनों के लिए उपयोगी होती है। रोग चाहे जो हो, उसकी अवस्था चाहे जो हो, उसका कारण कुछ भी हो, रोग का निदान हो अथवा न हो, आहार-विहार, चिन्तन-मनन द्वारा प्रकृति के सनातन नियमों की साधारण जानकारी एवं थोड़ी सी सावधानी रख शिवाम्बु द्वारा सभी रोगों का उपचार आत्मविश्वास के साथ कर रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है। स्वमूत्र चिकित्सा का आधार होता है प्रकृति के सनातन सिद्धान्त एवं अनुभूतिपरक अंतिम सुखद परिणाम। स्व मूत्र उपचार अच्छी चिकित्सा के उपरोक्त सभी तथ्यों

पर शतप्रतिशत खरा उतरता है।

इसके अतिरिक्त इस चिकित्सा पद्धति को सभी प्रमुख धर्म ग्रन्थों का समर्थन प्राप्त है। शिवाम्बु कल्प एक योग है जिसके द्वारा शरीर, मन एवं इन्द्रियों के विकारों को दूर कर सहज स्थिति में आया जा सकता है। जो साधना का प्रथम चरण होता है। यह पद्धति पूर्णतः सुरक्षित, स्वयं के पास चौबीसों घण्टे उपलब्ध, बिना दवा, बिना खर्च, बिना कष्ट, शारीरिक और मानसिक शक्ति बढ़ाने वाली तथा शरीर की रोग प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाने वाली है। आज सौन्दर्य प्रसाधन के रूप में अनेक हानिकारक रसायनों के प्रयोग के कारण अस्थायी सुन्दरता के बदले विभिन्न त्वचा रोग बढ़ रहे हैं। शिवाम्बु हानिकारक सौन्दर्य प्रसाधनों का सस्ता, सुन्दर, अहिंसक, प्रभावशाली विकल्प है।

शिवाम्बु चिकित्सा से अत्यधिक धनोपार्जन संभव नहीं

आधुनिक अर्थ उपार्जन के साधनों का मूल्य, अभाव से उनकी दुर्लभता पर निर्भर करता है न कि उसकी आवश्यकता एवं उपयोगिता पर। जो वस्तुएँ सहज में उपलब्ध होती हैं उनका मूल्य नहींवत ही होता है। परन्तु जिनका अभाव होता है उनका मूल्य अधिक होता है। जैसे हमारे जीवन के लिए हवा, पानी, सूर्य के प्रकाश का प्रायः महत्त्व नहीं होता उसी प्रकार स्वमूत्र जैसा रसायन सबके पास सहजता से उपलब्ध होने से उसका मूल्य नहीं समझते, भले ही वह कितना ही उपयोगी, गुणकारक क्यों न हो? अर्थात् शीघ्र लाभ अर्जित करने की मान्यता रखने वालों को सहजता से उपलब्ध स्वमूत्र व्यवसाय, दवा की तुलना में लाभप्रद नहीं हो सकता।

जनसाधारण में शिवाम्बु के प्रति घृणा क्यों?

इस रसायन का सेवन जब तक मानव नियमितता से करता रहा, अपने को निरोगी रखने में वह स्वावलम्बी था। जंगल एवं मानवों के बीच रहने वाले लावारिस पशु आज भी इसके सेवन से अपने को निरोगी रखने में स्वावलम्बी हैं।

शैव, अघोरी, नागा, लामा, ओल, पादरी, सुफी आदि संप्रदायों के योगी, तांत्रिक, संत, साधक एवं वैरागी तो अपने शरीर में रहे सारे ज्ञात एवं अज्ञात रोगों का, इसका सेवन कर, आज भी स्वयं का उपचार करते हैं। गाँवों में दाइयाँ बच्चों के पैदा होते ही उनके मुँह में शिवाम्बु की चंद बूंदें डालकर उन्हें रोग से मुक्त रखती हैं। गाँवों की वृद्ध महिलाएँ छोटे बच्चों को स्वमूत्र का सेवन कराकर, उनकी रोग प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाकर स्वस्थ रखती हैं। सुदूर पूर्व गाँवों के आदिवासी जहाँ अन्य चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं, अपने को निरोगी रखने हेतु स्वमूत्र का सेवन करके ही स्वावलम्बी हैं। अनेक पशु-पक्षी भी अपने रोगों का उपचार स्वतः प्रेरणा से स्वमूत्र से करते हैं। अपराधी पुलिस के दण्ड को सहन करने की शक्ति बढ़ाने हेतु शिवाम्बु पीते हैं। चोट लगने और दुर्घटना में घाव ग्रस्त भाग पर मानव मूत्र का प्रयोग आज भी किया जाता है। मानव बुद्धि का जैसे-जैसे विकास होता गया, वैसे-वैसे उसका रूझान भी सुस्वादु भोजन की तरफ बढ़ने लगा, जिससे उसका स्वमूत्र भी दुर्गन्धमय होने लगा। तभी से वह इसके सेवन से डरीझकने लगा।

परिणामस्वरूप मानव की कामना एवं सोच के अनुसार दवा आधारित विभिन्न परावलम्बी चिकित्सा पद्धतियों की खोज एवं विकास होने लगी। स्वावलम्बी शिवाम्बु चिकित्सा, उन दवा से उपचार करने वाली पद्धतियों के स्वार्थ में बाधक होने से, उनसे संबंधित दवा निर्माता, दवा विक्रेता, चिकित्सक आदि स्वमूत्र के विरुद्ध भ्रामक प्रचार-प्रसार कर घृणा फैलाते हैं। मानव मूत्र पर अज्ञानवश भ्रामक, मिथ्या प्रचार करने वाले क्या यह सिद्ध कर सकते हैं कि इसमें हानिकारक पदार्थ क्या हैं? इसके प्रयोग से किसको कितना नुकसान हुआ और नहीं तो क्यों? उसके घटकों का आधुनिक दवा और इंजेक्शन बनाने में उपयोग क्यों लिया जा रहा है? शिवाम्बु क्या है? शरीर में उसका निर्माण कैसे होता है? उसमें कौन-कौन से उपयोगी घटक होते हैं? दुनियाँ में मानव मूत्र पीने वाले करोड़ों व्यक्तियों की इसके बारे में क्या प्रतिक्रियाएँ हैं? शिवाम्बु से रोग क्यों और कैसे ठीक होते हैं? क्या इन तथ्यों का उनके पास संतोषप्रद उत्तर है? बिना प्रभावशाली परिणाम किसी भी चिकित्सा का प्रभाव दीर्घकाल तक नहीं रह सकता।

आधुनिक चिकित्सा के प्रति अज्ञानवश जनसाधारण का दृष्टिकोण-

आधुनिक संस्कृति, औद्योगिक प्रगति एवं भौतिक जगत में चमत्कारिक उपलब्धियों के कारण जनसाधारण का जीवन प्रकृति से दूर होता जा रहा है। मानव शीघ्रातिशीघ्र बिना अपेक्षित पुरुषार्थ सब कुछ पाना चाहता है। सम्यक् जीवन पद्धति से हमारी रुचि कम होती जा रही है। कम समय में बिना कष्ट, अधिक से अधिक सुख कैसे भोगा जाये, मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य बनता जा रहा है। यहाँ तक स्वयं का स्वास्थ्य भी, मन चाहा खान-पान, चिन्तन-मनन, आचार-विचार, रहन-सहन, बिना श्रम एवं परहेज रख प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण कर पाना चाहता है। परिणाम स्वरूप उसकी कष्ट सहन करने की शक्ति एवं रोग प्रतिकारात्मक क्षमता मंद होती जा रही है।

आधुनिक चिकित्सकों ने चिकित्सा के क्षेत्र में शल्य चिकित्सा द्वारा हृदय, लीवर, गुर्दा, नेत्र की पुतलियों, घुटनों आदि का प्रत्यारोपण एवं उपचार संभव कर दिया है। शरीर के किसी भी भाग में जमा विकृतियों को दूर कर संबंधित शारीरिक रोगों में राहत दिलाने में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है। परिणामस्वरूप जनसाधारण एवं स्वास्थ्य मंत्रालय आधुनिक चिकित्सा को ही चमत्कारिक, प्रभावशाली और वैज्ञानिक मानता है तथा शिवाम्बु जैसी अनुभूत चिकित्सा पद्धति के प्रति संदेहास्पद दृष्टिकोण रखता है। जब तक कोई तथ्य आधुनिक चिकित्सा पद्धति के मापदण्डों द्वारा मान्य अथवा प्रमाणित नहीं हो जाता तब तक प्रायः जनसाधारण शिवाम्बु चिकित्सा के बारे में जानने, समझने, सुनने, स्वीकारने एवं अपनाने में संकोच करता है, भले ही शिवाम्बु चिकित्सा अक्षी चिकित्सा पद्धति के मापदण्डों पर शत-प्रतिशत खरी उतरती है।

सही सोच का अभाव-

सम्यक् चिन्तन के अभाव में कभी-कभी व्यक्ति की सोच, मायावी विज्ञापनों, भीड़, तत्कालिक लाभ, बाह्य चकाचौंध से प्रभावित हो सकती है। सही जानकारी के अभाव में या

आशिक जानकारी के कारण व्यक्ति कभी-कभी गलत को सही और सही को गलत समझने की भूल भी कर सकता है। उसका निर्णय स्वयं के भविष्य के लिए उपयोगी होने के स्थान पर हानिकारक भी हो सकता है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति में रोगों के मुख्य लक्षणों को दूर कर रोगी को तुरन्त राहत पहुँचाने का ही मुख्य ध्येय रहता है भले ही रोग का मूल बने रहने के कारण उसके भविष्य में कितने ही घातक दुष्प्रभाव पड़ते हों। तुरन्त राहत पाने एवं डॉक्टरों के पास पड़ने वाली भीड़ तथा दवा निर्माताओं के भ्रामक विज्ञापनों के कारण जनसाधारण उपचार से होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति बेखबर होता जा रहा है। वह डॉक्टर से निदान एवं उपचार की प्रमाणिकता पर चर्चा, अनुप्रेक्षा न कर, मात्र अन्ध श्रद्धा करता है। इसके अलावा आधुनिक चिकित्सा और डॉक्टर पर विश्वास इसलिए भी है, क्योंकि उनकी फीस, निदान और औषधि के लिए जेब से रुपया दिया जाता है। वही डॉक्टर यदि बिना पैसे एवं अनावश्यक परीक्षण न कराये तो उसके निदान और उपचार पर हमारा विश्वास प्रायः नहीं रहता। वास्तव में सच्चाई तो यह है कि आज रोग के लिए डॉक्टर न होकर डॉक्टर के लिए रोग और रोगी है। इसी कारण आधुनिक चिकित्सकों एवं अस्पतालों के बढ़ने एवं स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा प्रतिवर्ष अरबों रुपये खर्च करने के बावजूद भी रोग एवं रोगियों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है जिस पर प्रत्येक स्वास्थ्य प्रेमी का चिन्तन अपेक्षित है।

चिकित्सा में वैज्ञानिकता का आधार क्या हो ?-

आज का युग वैज्ञानिक युग कहलाता है। सत्य की खोज का नाम विज्ञान है। विज्ञान सत्य को स्वीकारता है और झूठ को नकारता है। विज्ञान का आधार होता है—“सच्चा सो मेरा न कि मेरा जो सच्चा” वास्तव में जो सत्य है। उसको स्वीकारने में किसको आपत्ति हो सकती है? परेशानी तो तब होती है जब विज्ञान के नाम पर आशिक तथ्यों पर आधारित अधूरे सत्य को पूर्ण बतलाने हेतु मायावी आंकड़े, झूठे-भ्रामक विज्ञापनों एवं संख्या बल का सहयोग लिया जाता है तथा वास्तविकता एवं सनातन सत्य को नकारा जाता है। किसी भी तथ्य को वैज्ञानिक मानने के लिए अंतिम परिणामों की एकरूपता आवश्यक होती है, भले ही वह प्रयोग किसी के द्वारा, कहीं पर भी क्यों न किया गया हो। क्या करोड़ों व्यक्तियों के कहने से दो और दो पाँच हो सकते हैं? दो और दो तो चार ही होते हैं भले ही कहने वाला एक ही क्यों न हो? मानव शरीर केवल जड़ शरीर ही नहीं परन्तु इसके साथ चेतन आत्मा का भी अस्तित्व है। उस आत्मा की उपेक्षा करने वाला एवं मात्र शरीर के आधार पर अपनी उपलब्धियाँ मानने वाला स्वास्थ्य विज्ञान पूर्ण सत्य पर आधारित नहीं हो सकता।

वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति कौनसी ?

स्वावलम्बी या परावलम्बी, सहज अथवा दुर्लभ, सरल अथवा कठिन, सस्ती या महंगी, प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों पर आधारित प्राकृतिक या नित्य बदलते मापदण्डों वाली अप्राकृतिक, अहिंसक अथवा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा, निर्दयता, क्रूरता को बढ़ावा देने

वाली, दुष्प्रभावों से रहित अथवा दुष्प्रभावों वाली, शरीर की प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाने वाली या कम करने वाली, रोग का स्थायी उपचार करने वाली अथवा क्षणिक राहत पहुँचाने वाली, सारे शरीर को एक इकाई मानकर उपचार करने वाली अथवा शरीर का टुकड़ों-टुकड़ों के सिद्धान्त पर उपचार करने वाली। उपर्युक्त मापदण्ड के आधार पर हम स्वयं निर्णय करें कि कौनसी चिकित्सा पद्धति वैज्ञानिक है और कौनसी अवैज्ञानिक? अतः जो पद्धति सहज, सरल, सस्ती, दुष्प्रभावों से रहित, स्वावलम्बी एवं अहिंसक होने के साथ-साथ शरीर, मन, वाणी, भाव और आत्मा के विकारों को कम करने में जितनी अधिक सक्षम हो, जिस पद्धति में करणीय-अकरणीय, न्याय-अन्याय, अहिंसा-हिंसा, सनातन-क्षणिक, भक्ष्य-अभक्ष्य, वर्जित-अवर्जित का विवेक हो, जो उपचार करते समय स्वयं की सजगता, भागीदारी को महत्त्व देती हो, वही चिकित्सा पद्धति अपने आपको वैज्ञानिक एवं सर्वश्रेष्ठ होने का दावा कर सकती है।

विज्ञापन और शीघ्रता के इस युग में जिस मानसिकता में हम जी रहे हैं, जो चिकित्सा न सहज है, न सरल है, न सस्ती है, न स्वावलम्बी है, न अहिंसक है, न पूर्ण है, न दुष्प्रभावों से रहित है, न स्थायी है, फिर भी आधुनिक चिकित्सा को विकसित, वैज्ञानिक, प्रभावशाली मानना कितनी बुद्धिमत्ता है? स्वास्थ्य प्रेमियों के लिए चिन्तन का प्रश्न है?

आधुनिक चिकित्सा को सर्वसर्वा मानने का दुष्परिणाम-

आधुनिक चिकित्सा पद्धति को अत्यधिक महत्त्व मिलने तथा सरकारी मान्यता, सहयोग और संरक्षण मिलने के कारण अधिकांश आधुनिक डॉक्टरों में अन्य चिकित्सा पद्धतियों के प्रति गुण ग्राहकता प्रायः नजर नहीं आती। कभी-कभी तो वे अनायास उन पर बिना सोचे-समझे आरोप अथवा मिथ्या प्रचार करते तनिक भी नहीं हिचकिचाते। जनमानस की उनके प्रति अटूट आस्था होने से उनके कथनों का जनता पर ज्यादा और जल्दी प्रभाव पड़ता है। विज्ञापन, अन्धा:नुकरण, भीड़भाड़ वाले शीघ्रता के इस युग में अज्ञानवश अपनी क्षमताओं से अपरिचित होने के कारण तथा प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों और आयुष्य कर्म के सिद्धान्तों पर विश्वास न होने के कारण आज के डॉक्टरों को भगवान से ज्यादा महत्त्व मिल रहा है। व्यक्ति अपनी असजगता, चिकित्सक के प्रति अंध श्रद्धा, दवाओं के दुष्प्रभावों के प्रति सम्यक् सोच न होने से, रोगी डॉक्टरों की प्रयोगशाला बनता जा रहा है।

जनसाधारण द्वारा आधुनिक चिकित्सा को ही वैज्ञानिक मानने के कारण शिवाम्बु परामर्श दाताओं में भी जितना आत्म विश्वास होना चाहिए प्रायः नजर नहीं आता। शिवाम्बु उपचार को प्रमाणिक एवं वैज्ञानिक बतलाने के लिए आधुनिक चिकित्सा के मापदण्डों को प्राथमिकता देते हैं। उपचार के परिणामों को आधुनिक परीक्षणों से सत्यापित करवाना आवश्यक समझते हैं। यदि कभी कोई डॉक्टर उनके पक्ष में अभिमत देता है तो उसको प्राथमिकता से प्रचारित करते हैं। आधुनिक चिकित्सा द्वारा परिभाषित रोगों में नामों के आधार पर उपचार बतलाते हैं एवं अपेक्षित परिणाम न आने पर अन्य प्रभावशाली चिकित्सा पद्धतियों की अपेक्षा आधुनिक चिकित्सा पद्धति का परामर्श लेने की सलाह देते हैं। रोगग्रस्त होने पर अधिकांश शिवाम्बु प्रचारक

भी अस्पतालों एवं डॉक्टरों के चक्कर लगाते नजर आते हैं। अतः जनसाधारण को उनके दावों पर विश्वास न होना स्वाभाविक है। परन्तु आधुनिक चिकित्सा विज्ञान स्वयं अपूर्ण है। सत्यांश पर आधारित है। जिसका आधार रोग के मूल कारणों की अपेक्षा, उससे पड़ने वाले प्रभावों को शांत कर, रोगी को तुरन्त राहत पहुँचाने का होता है, भले ही उसके दुष्प्रभाव पड़ते हों। उपचार हेतु हिंसा, अभक्ष्य सेवन, अकरणीय आचरण उपेक्षित होते हैं। प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों एवं आध्यात्मिकता की पालना को महत्त्व नहीं दिया जाता। वहाँ मुख्य रोग का उपचार होता है, परोक्ष रोग गौण होते हैं। अर्थात् उपचार करते समय पूर्ण शरीर, मन और आत्मा की समग्रता को एक रूप नहीं समझा जाता। उपचार करते समय कर्म बंधन की प्रवृत्तियाँ एवं आत्मा पूर्ण रूप से गौण होती है। आत्मा की उपेक्षा का मतलब नौकर को मालिक से अधिक महत्त्व देना।

पानी पीने से प्यास शांत होती है। अग्नि का स्पर्श जलाता है। शरीर में पिन चुभने से चीख निकलती है आदि ऐसे अनुभूत सत्य हैं, जिनके लिए परिणामों को प्रमाणित करने के लिए आंकड़ों के संकलन की आवश्यकता नहीं होती। उसी प्रकार जो उपचार दुष्प्रभावों से रहित हो और रोगों से मुक्ति दिलाते हों, जो प्रकृति के सनातन सत्य पर आधारित हों उनको भौतिक सत्यापन एवं संकलित आंकड़ों के अभाव में स्वीकार न करना, हमारी पूर्वाग्रसित मान्यताओं का सोच हो सकता है। विज्ञान का सोच नहीं हो सकता। विज्ञान हानि-लाभ का विश्लेषण करता है। आधुनिक दवाओं और चिकित्सा पद्धति का बढ़ा-चढ़ा कर विज्ञापन किया जाता है, परन्तु उससे पड़ने वाले दुष्प्रभावों की उपेक्षा की जाती है। ऐसी सोच वाले अपने आपको ही वैज्ञानिक तथा शिवाम्बु जैसी प्रभावशाली, स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धति को अवैज्ञानिक अथवा वैकल्पिक बतलाने का दावा कैसे कर सकते हैं? परन्तु हमारी असजगता, भ्रामक विज्ञापनों से प्रभावित गलत सोच के कारण आज ऐसा ही प्रचार हो रहा है। जिस प्रकार रत्न की पहचान डॉक्टर, वकील, नेता अथवा इंजीनियर नहीं कर सकता, उसके लिए जौहरी की दृष्टि चाहिए। उसी प्रकार शिवाम्बु के बारे में प्रतिक्रिया करने से पूर्व आधुनिक चिकित्सा प्रेमियों को अपना पूर्वाग्रह छोड़ उससे संबंधित तथ्य परक, तर्क संगत, सम्यक् साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। शिवाम्बु सेवन करने वालों की प्रतिक्रियाओं एवं अनुभवों को सुनना एवं समझना चाहिए। उनसे विचार विमर्श हेतु जिज्ञासापूर्वक अपनी शंकाओं का सम्यक् समाधान करना चाहिए। किसी तथ्य को बिना सोचे-समझे स्वीकार करना मूर्खता है, तो किसी अनुभूत सत्य को बिना सोचे समझे नकारना भी बुद्धिमत्ता नहीं कहा जा सकता। हम किसी बात पर विश्वास न करें, परन्तु उस सम्बन्ध में बिना पूर्ण जानकारी, अज्ञानवश अविश्वास करना भी उचित नहीं है। जिस प्रकार यदि कोई अशिक्षित व्यक्ति अनुभवी डॉक्टरों की भरी सभा में चिकित्सा विषयों पर अधिकारपूर्वक बोले तो उसकी बात का क्या महत्त्व? उसकी क्या सार्थकता? उसी प्रकार जानकारी के अभाव में शिवाम्बु चिकित्सा के विषय पर आधुनिक चिकित्सा प्रेमियों द्वारा नीति सम्बन्धी अभिमत देना नासमझी है।

शिवाम्बु क्या है ?

आमाशय में भोजन का पाचन होने के पश्चात् पाच्य भोजन के पोषक तत्त्व ग्लूकोज में

रूपान्तरित होकर रक्त में मिलते हैं। रक्त उस ग्लूकोज को शोषित कर लेता है। स्वस्थ शरीर के रक्त में प्रत्येक घटक के आवश्यक अनुपात का संतुलन रहता है। अतः शोषित हुए सारे पदार्थों को रक्त उसी क्षण एक साथ में ग्रहण नहीं कर सकता। हमारे गुर्दे प्रतिदिन सैंकड़ों लीटर रक्त का शुद्धिकरण करते हैं। शुद्धिकरण हेतु जब रक्त गुर्दा में से गुजरता है तो शुद्ध हुए रक्त का अधिकांश भाग पुनः रक्त में मिलता है। जो घटक उस क्षण रक्त में पहले से ही अधिक होते हैं वे घटक पानी के साथ मूत्र के रूप में शरीर से बाहर निकलते हैं। शरीर में तत्काल उन अतिरिक्त घटकों को अलग से संग्रह कर रखने की व्यवस्था न होने से गुर्दा द्वारा ऐसे जीवनोपयोगी रक्त के अतिरिक्त पदार्थों को मूत्र के रूप में बाहर कर दिया जाता है। जिस प्रकार किसी व्यक्ति ने 100 अतिथियों को आमंत्रित कर उनके लिए भोजन बनवाया। परन्तु भोजन हेतु 80 मेहमान ही पधारे। अतः 20 व्यक्तियों का भोजन उपयोग में न आ सका। क्या बचा हुआ भोजन बेकार है? ठीक उसी प्रकार मानव मूत्र रक्त से बनता है। अतः यह रक्त का ही प्रतिबिम्ब होता है। मानव मूत्र में प्रायः अधिकांश वे ही घटक होते हैं जो उसके रक्त में होते हैं। अगर वे घटक रक्त में रहकर हानि नहीं पहुँचा सकते तो शिवाम्बु के रूप में उनका सेवन कैसे हानिकारक हो सकता है?

आज वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिवाम्बु शरीर से गुर्दा द्वारा रक्त के शुद्धिकरण से प्राप्त जीवनोपयोगी जल का वह भाग है, जिसमें शरीर के लिए उपयोगी सैंकड़ों ऐसे तत्व होते हैं, जिनका शरीर तत्काल उपयोग नहीं कर पाता और उनको संचय करने तथा रखने के लिए शरीर में अलग से व्यवस्था नहीं होने से उसको विसर्जित करना पड़ता है। ऐसे उपयोगी तत्व जो आवश्यकता से ज्यादा होते हैं, शिवाम्बु के माध्यम से शरीर के बाहर आते हैं।

शिवाम्बु के प्रति जनसाधारण की सोच कितनी सही?

शिवाम्बु तो गंदा, हानिकारक, अनुपयोगी जहर है, कचरा है। क्या उसे पीना उचित है? जिसको शरीर बाहर निकालता है फिर से उसे मुँह में डालना क्या सभ्यता है? मर जायेंगे परन्तु मूत्र का स्पर्श नहीं करेंगे, ऐसी सोच रखने वालों को चिंतन करना चाहिए कि माता के स्तनों से प्राप्त दूध नवजात बालक के लिए अत्यधिक गुणकारक होता है। आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा में आँखों से निकलने वाले आसुओं का प्रयोग दवा के रूप में किया जाता है। शरीर से निकलने वाले पसीने की मालिश कर शरीर में सुखाने से त्वचा संबंधी अनेक रोगों का उपचार होता है। आधुनिक चिकित्सक अनेक रोगों में रोगी के शरीर का रक्त निकाल पुनः इंजेक्शन के रूप में उसमें लगाते हैं, जिसको स्वरक्त चिकित्सा कहा जाता है। मुँह द्वारा शरीर के अन्दर की वायु बाहर निकलने की क्रिया के कारण ही मानव बोल सकता है, गाना एवं भजन गा सकता है। शरीर जो पदार्थ बाहर निकालता है वे सभी अनुपयोगी अथवा हानिकारक ही हों, ऐसा सदैव सत्य नहीं होता। प्रायः जनसाधारण के मन में एक प्रश्न उठता है कि जब शिवाम्बु इतना लाभप्रद है तो शरीर इसको बाहर क्यों भेजता है? अतः शरीर द्वारा शिवाम्बु को बाहर निकाल देने मात्र के कारण उसे अनुपयोगी अथवा हानिकारक मानना न्याय संगत नहीं कहा जा सकता। शरीर की गंदगी को बाहर करने का कार्य मलद्वार, त्वचा, नाक, मुँह, कान, आँख आदि के द्वारा होता है।

स्वास्थ्यवर्धक अवयवों का खजाना मानव मूत्र-

मानव मूत्र हानिकारक, विषैला, गंधा, खराब, विजातीय तत्त्व नहीं है, जैसा कि अज्ञानवश भ्रामक विज्ञापनों से प्रभावित हो, जनसाधारण की असजगता का लाभ उठाकर चंद स्वार्थी व्यक्तियों द्वारा बार-बार प्रचारित किया जाता है। जो सत्य पर आधारित नहीं है। स्वमूत्र पर की गई शोध से यह तथ्य स्पष्ट हुआ है कि स्वमूत्र रक्त से बनता है। जो घटक हमारे रक्त में होते हैं उनमें से अधिकांश घटक मानव मूत्र में भी पाये जाते हैं। यूरिया, यूरिक एसिड, क्रियटिन, क्रियेटिनाइन, सोडियम, पोटेशियम, कैल्शियम, मैगनेशियम, क्लोराईड, सल्फाइड आदि सारे घटक कम अधिक मात्रा में रक्त में भी पाये जाते हैं। अगर खून वेस्ट (Waste) नहीं तो मूत्र को भी बेकार नहीं कहा जा सकता। मानव मूत्र तो वास्तव में स्वास्थ्यवर्धक, जीवनोपयोगी, गुणों से भरपूर पोषक तत्वों का अमूल्य खजाना है। शिवाम्बु में सैकड़ों उपयोगी खनिज, रसायन, हारमोन्स, एन्जाइम्स, विटामीन, क्षार, पोषक तत्व, विष नाशक पदार्थ तथा रोग निवारक, पीड़ा को शान्त करने वाले, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता और ताकत बढ़ाने वाले तत्व होते हैं, जो निष्क्रिय अंगों को सक्रिय बनाने, रक्त के शुद्धिकरण, पाचन एवं श्वसन तंत्र जैसे-विभिन्न शारीरिक क्रियाओं को सुव्यवस्थित, नियन्त्रित और संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिवाम्बु के घटक रोग एवं रोगियों की स्थिति अनुसार बदलते रहते हैं।

स्वस्थ व्यक्ति के मूत्र में लगभग 95 प्रतिशत पानी होता है। उसके अलावा लगभग 02 प्रतिशत यूरिया, 0.3 प्रतिशत यूरिक एसिड, 0.1 प्रतिशत क्रियेटिनाइन, 0.1 प्रतिशत सोडियम, 0.6 प्रतिशत पोटेशियम, 0.015 प्रतिशत कैल्शियम, 0.01 प्रतिशत मैगनेशियम, 0.6 प्रतिशत क्लोराइड, 0.12 प्रतिशत फोस्फेट, 0.18 सल्फेट, 0.05 प्रतिशत अमोनिया आदि के अलावा सैकड़ों स्वास्थ्य उपयोगी तत्वों की वैज्ञानिकों द्वारा पुष्टि की गई है।

इन्हीं जीवनोपयोगी घटकों के कारण शिवाम्बु उपचार विभिन्न रोगों में प्रभावशाली हो रहा है। मूत्र में पाये जाने वाले यूरिया घटक में पोलियो और रेबीज जैसे वायरस को तुरन्त एवं सहजता से प्रभावहीन करने का गुण होता है। एलर्जी पैदा करने वाले शरीर में उपस्थित पदार्थों को नष्ट करता है। घावों में जो सड़ने की क्रिया होती है उसके लिए यूरिया डिटरजेन्ट का कार्य करता है। जिससे घाव तुरन्त ठीक होते हैं एवं उनमें सड़ान्ध की संभावना नहीं रहती। यूरोकायनेस श्राव से रक्त प्रवाह में कोलस्ट्रॉल के कारण उत्पन्न अवरोध दूर होते हैं जिससे हृदय रोग एवं पक्षाघात जैसे रोग ठीक होते हैं। स्वमूत्र में Ureaphil होता है जो डायूरिटिक (Diuretic) का काम करता है तथा मस्तिष्क में किसी प्रकार की सूजन (Head Injury) होती है तो उसके अन्दर जो पानी ज्यादा मात्रा में होता है उसको निकालने में सहायक होता है। यह 'Antibacterial Antiseptic' की तरह कार्य करता है।

स्वमूत्र में Antineoplastin नामक हार्मोन्स है जो कैंसर कोष के अनियन्त्रित फैलाव को नियन्त्रित करता है और कैंसर रोग मिटाता है। इसके अलावा स्वमूत्र में कैंसर मिटाने वाले और भी हार्मोन्स होते हैं। जैसे Directin, H11, Three Mythyle Glycogen, Melatonin और Deha स्वमूत्र

का एंजाइम रेनीन और पिगमेंट फिलीरूबीन भी कैंसर मिटाने में मदद करती है।

स्वमूत्र में पाये जाने वाले Erythropoetin हारमोन्स के कारण उसका नियमित सेवन करने वालों के वृद्धावस्था के लक्षण समय के पूर्व प्रकट नहीं होते। स्वमूत्र में पाये जाने वाले Allantoin के कारण घाव जल्दी भरते हैं एवं उनमें सड़ान्ध पैदा नहीं होती। स्वमूत्र में Cortison नामक हारमोन्स के कारण स्वमूत्र से आँखें धोने एवं कानों में डालने से उनसे संबंधित रोगों से मुक्ति मिलती है। Phenelethamine घटक के कारण मानसिक संतुलन अच्छा रहता है। Deha, Dehydro Epiandrosteron नामक हारमोन्स से शरीर में स्फूर्ति आती है। Amylopsin, Tripsin, Lypae के कारण पाचन अच्छा होता है और भूख भी लगती है। Factor-5 नामक हारमोन्स अनिद्रा की समस्या दूर करता है।

आधुनिक दवाओं और इंजेक्शनों में शिवाम्बु का बढ़ता उपयोग-

आजतक मानव मूत्र पर किए गये अनुसंधानों से यह तथ्य सामने आया है कि स्वमूत्र चिकित्सा का आधार न केवल पुरातन ही है अपितु आधुनिक चिकित्सा के सिद्धान्तों पर भी शतप्रतिशत खरा उतरता है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने मानव मूत्र से अनेक महत्वपूर्ण घटक खोज निकाले हैं एवं अभी भी खोज जारी है। परिणामस्वरूप शिवाम्बु के घटकों का प्रयोग आज असाध्य एवं पुराने संक्रामक रोगों की दवाओं के निर्माण और इंजेक्शनों में होता है। यहाँ तक बहुत से शल्य चिकित्सक शारीरिक क्षमता बढ़ाने हेतु शल्य चिकित्सा करने से पूर्व एवं उसके पश्चात् शिवाम्बु के इंजेक्शन देते हैं। सैंकड़ों एलर्जी, अस्थमा, वायरल बुखार, दाद, चेचक, सुखी खांसी जैसे रोगियों का रोग निरोधक शिवाम्बु इंजेक्शनों द्वारा उपचार से प्रभावशाली परिणाम प्राप्त होते हैं। साथ ही अन्य रोग निरोधक टीकों से पड़ने वाले दुष्प्रभावों की भांति इन टीकों से किसी भी प्रकार का दुष्प्रभाव प्रायः नहीं होता। अर्थात् शिवाम्बु के टीके अन्य उपलब्ध विभिन्न रोग निरोधक टीकों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय होते हैं। हृदय घात एवं पक्षाघात के समय रक्त प्रवाह में आये अवरोधों को दूर करने के लिए शिवाम्बु से बने युरोकाइन इंजेक्शन सभी चिकित्सक लगाते हैं। बहुत सारे त्वचा रोगों में उपचार हेतु लगाया जाने वाला मल्हम मानव मूत्र में पाये जाने वाले यूरिया से ही बनाया जाता है।

शिवाम्बु में उपकारक तथा रोग प्रतिकारक ऐसे निर्दोष रासायनिक तत्त्व होते हैं, जो रोगी और निरोगी दोनों के लिये उपादेय होते हैं। फलस्वरूप विश्व के आधुनिक दवा निर्माताओं ने शिवाम्बु से प्राप्त जीवनोपयोगी आवश्यक तत्त्वों तथा अन्य भौतिक तत्त्वों के योग से कैंसर, एड्स, टी.बी., हृदय रोग, दमा, नपुंसकता, गुर्दा आदि असाध्य रोगों के उपचार हेतु बहुमूल्य प्राणदायिनी दवाइयों और इंजेक्शनों का व्यापक पैमाने पर निर्माण प्रारम्भ कर दिया है। जो महिलाएँ गर्भवती नहीं होती, उनके लिए दी जाने वाली Profasi रक्त शुद्धि हेतु उपयोगी Ureafil, रक्त को पतला करने हेतु Urokinase, बांझपन को दूर करने हेतु Urofollitroipn, त्वचा रोगों में लगाया जाने वाला मल्हम Ureacin, अल्सर एवं आग से जलने पर उपयोगी Penafil, प्रजनन संबंधी हारमोन्स वृद्धि हेतु Peragonal, इस्ट्रोजन बनाने में सहायक Premarin, गर्भधारण एवं

महिलाओं में महावारी की समस्या में उपयोगी Metrodin तथा अन्य असाध्य रोगों के लिए उपयोगी Serocruption Bromocriptine, Meprate, Ukidon, (FHS) आदि अनेक दवाईयों के निर्माण में शिवाम्बु का प्रयोग होता है। स्वयं का मूत्र स्वयं के शरीर की क्रिया-प्रतिक्रिया का दर्पण होता है। अतः उसमें उपस्थित घटकों द्वारा निर्मित दवाओं का उपयोग करने के स्थान पर शिवाम्बु का ही उपयोग कर, शरीर की प्रतिकारात्मक शक्ति को बढ़ाकर, अधिकांश रोगों का स्थायी प्रभावशाली उपचार किया जा सकता है।

शिवाम्बु उपचार का सिद्धान्त-

रोग शरीर में पैदा होता है। शरीर में विजातीय तत्त्वों अथवा विकारों के बढ़ने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाने से होता है। अतः जब तक विजातीय तत्त्वों को न केवल हटाया जाए अपितु भविष्य में पैदा होने से न रोका जाए तब तक स्थायी रूप से रोग मुक्त नहीं हुआ जा सकता। शिवाम्बु अपने गुणों के कारण इसी सिद्धान्तानुसार कार्य करता है। स्वमूत्र शरीर में जाकर आंख, नाक, कान आदि नाड़ियों सहित पूरे शरीर के प्रत्येक भाग की सफाई करता है। उसके पश्चात् प्राण ऊर्जा के प्रवाह में आने वाले विजातीय तत्त्वों एवं असंतुलन से उत्पन्न अवरोधों को हटाता है और अंत में रोग से होने वाली निष्क्रिय कोशिकाओं के पुनःनिर्माण में सहयोग करता है। शरीर से अनावश्यक विजातीय तत्त्वों के निकल जाने से रोग के कारण दूर होने लगते हैं। इस सफाई से रोग के प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष जो भी कारण हों, दूर होने लगते हैं। शिवाम्बु द्वारा रोगों के लक्षणों के अनुसार उपचार नहीं होता अपितु रोग के कारणों को दूर किया जाता है। शिवाम्बु शरीर शुद्धि का सहज, सस्ता, सरलतम उपाय है। परन्तु उसके लिए आवश्यक है दृढ़ मनोबल, धैर्य, श्रद्धा एवं शिवाम्बु के गुणवता की सामान्य जानकारी।

स्वमूत्र एक प्रकार का परिचय पत्र है जिस पर शरीर के अन्दर घटित होने वाली जीव रासायनिक क्रिया-प्रतिक्रियाओं की सभी जानकारियाँ प्रतिबिम्बित होती हैं। शिवाम्बु चिकित्सा होमियोपैथिक सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करती है। जैसे अधिकांश रोग निरोधक टीके उन्हीं रोगों के अवयवों से बनाये जाते हैं। आधुनिक चिकित्सा में भी कुछ रोगों का उपचार रोगी के शरीर से रक्त निकालकर इंजेक्शन के रूप में उसी के शरीर में प्रवेश कराकर किया जाता है। ठीक उसी प्रकार शिवाम्बु का सेवन, शरीर में रोग प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाता है। शरीर में अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के स्वलित श्रावों के कारण हारमोन्स असंतुलन से होने वाले रोगों एवं शरीर की प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाने में शिवाम्बु के इंजेक्शन अत्यधिक प्रभावशाली सिद्ध हो रहे हैं।

शिवाम्बु और भोजन-

शिवाम्बु का हमारे भोजन एवं भावों से सीधा सम्बन्ध होता है। हम जो भोजन करते हैं, उसमें उपलब्ध सभी पोषक तत्त्व रक्त के अन्दर शोषित किए जाते हैं और उसी रक्त से स्वमूत्र बनता है। अतः यदि हम स्वमूत्र के रूप में अच्छा रसायन पाना चाहते हैं तो उसका कच्चा माल अर्थात् हमारा भोजन उतना ही सात्विक, प्राकृतिक एवं स्वास्थ्यवर्धक होना चाहिए।

शिवाम्बु पान कब और क्यों ?

पीने के लिए प्रातःकालीन प्रथम शिवाम्बु सर्वश्रेष्ठ होता है। रात में निद्रा में व्यक्ति अपने मानवीय स्वभाव में ही होता है। कोई व्यक्ति कितना भी क्रूर, हिंसक, क्रोधी, निर्दयी, अशान्त क्यों न हो, निद्रा में तो वह शांत और तनाव मुक्त ही होता है। अतः उस समय शरीर में जिन हारमोन्स का निर्माण होता है, वे विशेष स्वास्थ्य वर्धक होते हैं। अतः निद्रा त्याग के पश्चात् प्रातःकालीन शिवाम्बु अधिक लाभदायक होता है। इसका यह मतलब नहीं कि अन्य समय का शिवाम्बु उपयोगी नहीं होता। जो संयमी साधक शान्त, तनाव मुक्त, समभाव की साधना करने वाले, ध्यान अथवा भक्ति में सदैवलीन रहते हैं, वे कभी भी अपने शिवाम्बु का प्रयोग कर सकते हैं। जैन संत एवं श्रावक जो प्रातःकालीन (सूर्योदय से पूर्व के प्रथम) शिवाम्बु का नियमित सेवन न कर सकें, उन्हें स्वाध्याय, ध्यान, सामायिक, भक्ति के पश्चात् विसर्जित (सूर्योदय के पश्चात् उपलब्ध प्रथम) शिवाम्बु का सेवन करना चाहिए। मैं स्वयं नवकारसी तप (सूर्योदय के लगभग 50 मिनट) के पश्चात् ही प्रथम विसर्जित शिवाम्बु का सेवन करता हूँ।

शिवाम्बु पान से पूर्व मूत्र परीक्षा की आवश्यकता नहीं होती। मूत्रपान हेतु अपने ही मूत्र का यथा संभव सेवन करना चाहिए। उसका रंग, स्वाद और गंध कैसी भी हो, गाढ़ा हो, गंदला हो, उसमें रक्त अथवा मवाद ही क्यों न आता हो। मूत्र के बाहरी रंग रूप को देखकर हिचकिचाना नहीं चाहिए। चन्द दिनों के नियमित सेवन के पश्चात् शिवाम्बु साफ आने लग जाता है। प्रारम्भ में शिवाम्बुपान करने में स्वाद, गंध अथवा रंग के कारण हिचकिचाहट हो तो उसमें पानी मिलाकर भी पिया जा सकता है। धीरे-धीरे पानी की मात्रा कम कर मात्र मूत्र पीने में फिर परेशानी नहीं होती। उपचार हेतु स्वयं का विसर्जित मूत्र ही अधिक प्रभावशाली होता है क्योंकि उसमें रोग की आवश्यकतानुसार अधिकांश अवयव होते हैं। जिनका खानपान सात्त्विक है, उनके शिवाम्बु में दुर्गन्ध अपेक्षाकृत कम आती है। अतः शिवाम्बु पीना प्रारम्भ करने वालों को प्रारम्भ में अपने आहार पर विशेष ध्यान रखना चाहिए, ताकि अत्याधिक दुर्गन्ध के कारण जो झिझक हो, दूर हो सके।

यदि कोई रोगी अचेतन अवस्था में हो अथवा विषाक्त भोजन करने या जहरीले जानवर के काटे जाने के कारण स्वयं का मूत्र पीने की स्थिति में न हो तो उसे पुरुष की स्थिति में स्वस्थ पुरुष का अथवा स्त्री होने की स्थिति में स्वस्थ स्त्री का मूत्र पिलाया जा सकता है। इसी प्रकार यदि किसी अन्य रोग के कारण मूत्र न हो रहा हो तो उसी आयु के स्वस्थ व्यक्ति का मूत्र पिलाया जा सकता है। जब तक स्वयं का मूत्र उपलब्ध न हो। यौन संबंधी रोगों में अनुभवी शिवाम्बु के परामर्श से विपरीत लिंगीय व्यक्तियों का मूत्र भी लिया जा सकता है। गर्भवती महिलाओं के मूत्र का उपयोग बंध्यत्व संबंधित समस्याओं के निवारण में लाभप्रद होता है। इसी प्रकार जन्मजात मानसिक रूप से अविकसित बच्चों को स्वस्थ बच्चों का स्वमूत्र पिलाने से चमत्कारिक परिणाम मिलते हैं।

शिवाम्बु चिकित्सा से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने हेतु सभी प्रकार की दुष्प्रभावों

शिवाम्बु पान कब और क्यों ?

पीने के लिए प्रातःकालीन प्रथम शिवाम्बु सर्वश्रेष्ठ होता है। रात में निद्रा में व्यक्ति अपने मानवीय स्वभाव में ही होता है। कोई व्यक्ति कितना भी क्रूर, हिंसक, क्रोधी, निर्दयी, अशान्त क्यों न हो, निद्रा में तो वह शांत और तनाव मुक्त ही होता है। अतः उस समय शरीर में जिन हारमोन्स का निर्माण होता है, वे विशेष स्वास्थ्य वर्धक होते हैं। अतः निद्रा त्याग के पश्चात् प्रातःकालीन शिवाम्बु अधिक लाभदायक होता है। इसका यह मतलब नहीं कि अन्य समय का शिवाम्बु उपयोगी नहीं होता। जो संयमी साधक शान्त, तनाव मुक्त, समभाव की साधना करने वाले, ध्यान अथवा भक्ति में सदैवलीन रहते हैं, वे कभी भी अपने शिवाम्बु का प्रयोग कर सकते हैं। जैन संत एवं श्रावक जो प्रातःकालीन (सूर्योदय से पूर्व के प्रथम) शिवाम्बु का नियमित सेवन न कर सकें, उन्हें स्वाध्याय, ध्यान, सामायिक, भक्ति के पश्चात् विसर्जित (सूर्योदय के पश्चात् उपलब्ध प्रथम) शिवाम्बु का सेवन करना चाहिए। मैं स्वयं नवकारसी तप (सूर्योदय के लगभग 50 मिनट) के पश्चात् ही प्रथम विसर्जित शिवाम्बु का सेवन करता हूँ।

शिवाम्बु पान से पूर्व मूत्र परीक्षा की आवश्यकता नहीं होती। मूत्रपान हेतु अपने ही मूत्र का यथा संभव सेवन करना चाहिए। उसका रंग, स्वाद और गंध कैसी भी हो, गाढ़ा हो, गंदला हो, उसमें रक्त अथवा मवाद ही क्यों न आता हो। मूत्र के बाहरी रंग रूप को देखकर हिचकिचाना नहीं चाहिए। चन्द दिनों के नियमित सेवन के पश्चात् शिवाम्बु साफ आने लग जाता है। प्रारम्भ में शिवाम्बुपान करने में स्वाद, गंध अथवा रंग के कारण हिचकिचाहट हो तो उसमें पानी मिलाकर भी पिया जा सकता है। धीरे-धीरे पानी की मात्रा कम कर मात्र मूत्र पीने में फिर परेशानी नहीं होती। उपचार हेतु स्वयं का विसर्जित मूत्र ही अधिक प्रभावशाली होता है क्योंकि उसमें रोग की आवश्यकतानुसार अधिकांश अवयव होते हैं। जिनका खानपान सात्त्विक है, उनके शिवाम्बु में दुर्गन्ध अपेक्षाकृत कम आती है। अतः शिवाम्बु पीना प्रारम्भ करने वालों को प्रारम्भ में अपने आहार पर विशेष ध्यान रखना चाहिए, ताकि अत्याधिक दुर्गन्ध के कारण जो झिझक हो, दूर हो सके।

यदि कोई रोगी अचेतन अवस्था में हो अथवा विषाक्त भोजन करने या जहरीले जानवर के काटे जाने के कारण स्वयं का मूत्र पीने की स्थिति में न हो तो उसे पुरुष की स्थिति में स्वस्थ पुरुष का अथवा स्त्री होने की स्थिति में स्वस्थ स्त्री का मूत्र पिलाया जा सकता है। इसी प्रकार यदि किसी अन्य रोग के कारण मूत्र न हो रहा हो तो उसी आयु के स्वस्थ व्यक्ति का मूत्र पिलाया जा सकता है। जब तक स्वयं का मूत्र उपलब्ध न हो। यौन संबंधी रोगों में अनुभवी शिवाम्बु के परामर्श से विपरीत लिंगीय व्यक्तियों का मूत्र भी लिया जा सकता है। गर्भवती महिलाओं के मूत्र का उपयोग बंध्यत्व संबंधित समस्याओं के निवारण में लाभप्रद होता है। इसी प्रकार जन्मजात मानसिक रूप से अविकसित बच्चों को स्वस्थ बच्चों का स्वमूत्र पिलाने से चमत्कारिक परिणाम मिलते हैं।

शिवाम्बु चिकित्सा से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने हेतु सभी प्रकार की दुष्प्रभावों

वाली दवाईया बंद करना आवश्यक है। परन्तु ऐसा करने की रोगी की मानसिकता न हो एवं शिवाम्बु पीने से शरीर में कोई असहनीय प्रतिक्रिया होती हो तो नियमित शिवाम्बु का सेवन न करने वालों को धीरे-धीरे शिवाम्बु पीने की मात्रा बढ़ानी चाहिए। किसी भी प्रकार की आधुनिक दवा लेते हुए शिवाम्बु उपचार करने से उपचार की प्रभावशालीता कम हो जाती है और अवधि बढ़ जाती है। परन्तु शिवाम्बु सेवन से किसी प्रकार का दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।

परन्तु जब रोगी स्टीरॉइड या तीव्र एण्टीबायोटिक अथवा किमोथेरेपी जैसी दवाइयें ले रहा हो तो शिवाम्बु पान नहीं करना चाहिए। क्योंकि ऐसी दवाओं की मात्रा निश्चित होती है और उसके साथ यदि शिवाम्बु का सेवन किया जाये तो उन दवाओं की मात्रा शरीर में अधिक हो जाने की संभावना हो सकती है, जो शरीर को हानि पहुँचा सकती है।

महिलाओं के माहवारी के समय स्वच्छ मूत्र उपलब्ध होना कठिन होता है। अतः उस समय स्वमूत्र पान नहीं करना चाहिए। परन्तु उसके अतिरिक्त शेष दिनों में नियमित शिवाम्बु पान करने से माहवारी में अनियमिता प्रायः नहीं होती तथा जिन्हें माहवारी कम या ज्यादा, समय से पहले अथवा बाद में होती हो तो चन्द्र मास शिवाम्बु के सेवन से माहवारी नियमित होने लगती है। महिलाओं में मोनोप्राज के समय, लगभग जब माहावारी आना प्रकृति से बंद होता है उस समय रक्तस्राव बहुत अधिक होता है जिसके कारण युट्रस की शल्य चिकित्सा आम होती जा रही है। परन्तु इस शल्य क्रिया के परिणाम स्वरूप उन महिलाओं में हारमोन्स असन्तुलन के कारण शेष जीवन पर्यन्त यौन संबंधी समस्याएँ होती रहती हैं। यदि ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होने से पूर्व विधिवत शिवाम्बु का सेवन करने से शल्य चिकित्सा से बचा जा सकता है। जिन महिलाओं के श्वेत प्रदर की शिकायत हो, उन्हें शिवाम्बु डूष अर्थात् शिवाम्बु से योनि का प्रक्षालन करने से लाभ मिलता है।

गर्भधारण के पश्चात् नियमित विधिवत शिवाम्बु पान करने वाली महिलाओं को प्रसव के समय शल्य चिकित्सा की प्रायः आवश्यकता नहीं पड़ती और जन्म लेने वाला बालक शारीरिक एवं मानसिक रूप से सम्यन् होता है।

आज लाखों व्यक्ति मन अथवा मजबूरी से, समझकर अथवा बिना समझे, स्वस्थ अथवा अस्वस्थ अवस्था में शिवाम्बु का सेवन करते हैं। भले ही उनकी शिवाम्बु पर श्रद्धा हो अथवा न हो। नियमों एवं सिद्धान्तों का पूर्ण रूपेण पालन न करते हो। चन्द्र अपवादों को छोड़ कुछ न कुछ लाभ ही होता है और किसी प्रकार का दुष्प्रभाव नहीं पड़ता। भले ही विधिवत सेवन न करने से अपेक्षित लाभ न हुआ हो।

शराब की बोतल देखने अथवा पास में रखने से नशा नहीं होता। नशा होता है उसको पीने से। ठीक उसी प्रकार शिवाम्बु का गुणगान करने और सुनने से लाभ नहीं होता। उसका लाभ होता है उसके सेवन से। शिवाम्बु भाषण अथवा लेखन का विषय नहीं, अपितु उसके अनुरूप आचरण का विषय है। अतः प्रत्येक स्वास्थ्य प्रेमी को स्वयं के पास उपलब्ध इस रसायन का निःसंकोच उपयोग कर लाभ उठाना चाहिए।

शिवाम्बु सेवन की मात्रा-

शिवाम्बु गर्म प्रकृति का होने से इसको पीने की एक जैसी विधि का निर्धारण न्यायसंगत नहीं हो सकता। सर्दी की मौसम में अथवा कफ प्रकृति वाले उसका आवश्यकतानुसार स्वविवेक के साथ अधिकाधिक प्रयोग कर सकते हैं। वर्षा की मौसम में शिवाम्बु की मात्रा सर्दी की अपेक्षा थोड़ी कम तथा गर्मी की मौसम में तथा पित्त प्रकृति वालों को शिवाम्बु का पान अपेक्षाकृत कम करना चाहिए। चिड़चिड़े अथवा क्रोधी स्वभाव वालों तथा अधिक शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्तियों को शान्त, सुस्त अथवा आलसी व्यक्तियों की अपेक्षा शिवाम्बु पान कम करना चाहिए।

जो व्यक्ति दुर्व्यसनों से ग्रसित हैं, अथवा किसी प्रकार की दवा ले रहा है अथवा जिसका खानपान सात्त्विक नहीं है, उसको शिवाम्बु का अधिक सेवन करना चाहिए, ताकि थोड़े समय में ही उसके दुर्व्यसन छूट जाते हैं, दवा बंद हो जाती है तथा सात्त्विक खाने के प्रति आकर्षण बढ़ने लगता है। इसी प्रकार जिनके शरीर में मोटापा अथवा चर्बी ज्यादा है, उन्हें शिवाम्बु का सेवन अधिक मात्रा में करना चाहिये।

हमारे भोजन में लगभग 80 प्रतिशत क्षार एवं 20 प्रतिशत आम्लिक तत्त्व होने चाहिए। परन्तु अधिकांश व्यक्तियों का आहार आजकल इसके ठीक विपरीत होता है। अतः उन क्षार तत्त्वों की पूर्ति हेतु भोजन के पश्चात् शिवाम्बुपान ऐसे व्यक्तियों के लिए पाचन सुधारने में सहायक होता है।

मानव मूत्र आहार अथवा आहार का साधारण परिस्थितियों में विकल्प नहीं है। जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु का उपयोग उसकी आवश्यकतानुसार मर्यादा एवं विवेक से करना चाहिए उसी प्रकार मूत्र का भी उपयोग स्वयं की आवश्यकता, मौसम, प्रकृति एवं परिस्थितियों के अनुरूप ही करना चाहिए।

रोग को जल्दी ठीक करने के ध्येय से लम्बे समय से नियमित सेवन करने वाली दवाओं को छोड़ कर एकाएक पूर्ण शिवाम्बु का उपचार प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। इसका कारण आज तक रोगी ने अनेक प्रकार के अच्छे-बुरे पदार्थों वाली दवाइयों और इंजेक्शनों का उपयोग किया, जिसके कारण रोगी का शरीर एक विशेष आदत वाला बन जाता है। अन्दर जमें उन विजातीय तत्त्वों को धैर्य के साथ शरीर से बाहर निकालना चाहिए ताकि आपका शरीर और मन शिवाम्बु सेवन की अनावश्यक प्रतिक्रिया न करे और करे तो भी आप दृढ़ता से उसका सामना कर सकें।

शिवाम्बु उपवास-

उपवास के साथ शिवाम्बु का सेवन करने से शरीर को कुछ ताकत मिलती है जिससे दीर्घ तपस्या आसानी से की जा सकती है। असाध्य एवं पुराने रोगों के उपचार हेतु शिवाम्बु उपवास आवश्यक होता है। उपवास में यथासंभव मौन रखे एवं आराम करें। उपवास में किसी भी प्रकार का न तो फल ही खाना चाहिए और न फलों का रस भी लेना चाहिए। मात्र शिवाम्बुपान अथवा

आवश्यकतानुसार पानी पिया जा सकता है। जो व्यक्ति रात्रि में पानी भी नहीं पीते उन्हें केवल दिन का सारा मूत्र पीना चाहिए। रोगी की प्रकृति, आयु, शारीरिक क्षमता, रोग की स्थिति, मौसम आदि को ध्यान में रखकर ही उपवास की संख्या निश्चित की जाती है। जितने दिन का उपवास किया हो, उपवास खोलने के पश्चात् उतने दिनों तक गरिष्ठ, दुपाच्य आहार नहीं करना चाहिए। यदि रोगी का रक्तचाप कम हो, हृदय कमजोर हो अथवा ठीक से कार्य नहीं करता हो, उसे लम्बे उपवास अनुभवी शिवाम्बु चिकित्सकों की देखरेख में ही करने चाहिए। शिवाम्बु में शरीर के लिए पोषक तत्व होते हैं, अतः शिवाम्बु पीकर लम्बी तपस्या सरलता से ही की जा सकती है। लम्बी तपस्या करने वाले तपस्वियों के शिवाम्बु में विशेष औषधिय गुण विकसित होने से असाध्य रोगियों को ऐसा शिवाम्बु पीलाने से चमत्कारिक परिणाम आते हैं।

जिस विकार से शरीर में रोग होता है उसके बाहर निकल जाने से ही रोग ठीक होता है। वह विकार प्रायः तीन रास्तों से बाहर निकल सकता है। मुंह द्वारा उल्टी करने से, मल द्वारा दस्त से और शरीर के छिद्रों द्वारा गर्मी अर्थात् फोड़े-फुंसी आदि से बाहर निकलता है। उपवास में मूत्र प्रयोग से इन प्रतिक्रियाओं की प्रायः सम्भावना रहती है। खांसी से कफ धीरे-धीरे अलग होकर निकले तो उल्टियाँ न भी हो। बार-बार मल आने से अन्दर का विकार निकल जावे तो दस्त न भी हो। अगर ऐसा न हो तो उपवास प्रयोग में दस्त आने एवं उल्टियाँ होने की पूर्ण संभावना रहती है। ऐसा हो तो तनिक भी न घबरायें एवं प्रकृति को अपना कार्य करने दें। किसी अन्य प्रकार की दवा अथवा इंजेक्शन लेकर उस प्राकृतिक क्रिया को न दबायें।

शिवाम्बु के अन्य आन्तरिक प्रयोग-

दांतों का पायरिया, दांतों का सड़ना, दांतों का हिलना, मसूड़ों से रक्त अथवा पस आना, दांतों में दर्द होना आदि (दांतों में खड्डे पड़ने की स्थिति को छोड़कर) सभी प्रकार के दांतों के रोगों में ताजे स्वमूत्र को मुंह में भरकर गंडूस करने से दांतों के रोग बिल्कुल ठीक हो जाते हैं। यहां तक दिन में 3-4 बार इस प्रक्रिया को करने से मात्र 5-7 दिनों में हिलते हुए दांत मजबूत हो जाते हैं, जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों में प्रायः असंभव होता है। कान में शिवाम्बु डालने से श्रवण तंत्र शक्तिशाली होता है तथा कानों के सभी रोगों में लाभ होता है।

ताजे स्वमूत्र को 2-3 मिनट ठण्डा कर नियमित आंखों को धोने से आंखों के अनेक रोग ठीक हो जाते हैं। वृद्धावस्था में मोतियाबिंद पकने से पूर्व मुंह में पानी भरकर ताजे स्वमूत्र से नियमित आंखें धोने से भी कंटेक होने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं। परन्तु कंटेक होने के पश्चात् यदि पुराने स्वमूत्र को दिन में दो बार आंखों में डाला जाए तो कंटेक साफ हो सकता है और शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं रहती। जितना स्वमूत्र पुराना होता है, उतना उपचार अधिक प्रभावशाली होता है। फिर भी कम से कम 15 से 20 दिन पुराना स्वमूत्र तो होना ही चाहिए। पुराना शिवाम्बु आंखों में डालने से असहनीय जलन हो सकती है। अतः हमें एक दम पुराना शिवाम्बु आंखों में डालने के बजाय पहले उसी दिन का, फिर दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें दिन के हिसाब से अवधि क्रमशः बढ़ाते-बढ़ाते 15 से 20 दिन तक अवधि बढ़ाकर स्वमूत्र

नियमित डालना चाहिए। इससे आंखों का पुराने स्वमूत्र के साथ तालमेल हो जाता है। किसी दुष्प्रभाव की संभावना नहीं रहती। इंदौर के अनुभवी शिवाम्बु चिकित्सक माणक चन्द जी मारू के परामर्श से ऐसे बहुत से आंखों के रोगियों को शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ी। परन्तु ऐसा उपचार करते समय पूर्ण सजगता रखनी चाहिए।

शिवाम्बु नेति-

नासिका के छिद्रों की तरल पदार्थों से सफाई करने की विधि को नेति क्रिया कहते हैं। श्वसन संबंधी रोगों के उपचार हेतु नेति क्रिया विश्वसनीय सहज पद्धति है। नेति क्रिया से आज्ञा चक्र भी सक्रिय होता है एवं सभी प्रकार की एलर्जी दूर होती है। नेति क्रिया के लिये विशेष प्रकार का नेति का बर्तन मिलता है। नेति लोटे को शिवाम्बु से भर कर किसी एक नथूने से शिवाम्बु डालें और दूसरे छिद्र को मस्तिष्क को घूमाकर ऐसा रखें कि वह शिवाम्बु दूसरे छिद्र से बाहर निकल जाये। फिर यही क्रिया दूसरे नथूने से भी करें। उसके पश्चात् बारी-बारी से एक-एक नथूने को बन्द कर दूसरे नथूने से जल्दी-जल्दी और दबाव के साथ श्वास निकालें। जिससे नासिका मार्ग की सफाई हो जाती है।

प्रातःकाल और सोने से पूर्व नेति क्रिया करने से न केवल नथूनों की सफाई होती है, परन्तु उसके साथ साथ निद्रा अच्छी आती है। आंखों की ज्योति सुधरती है। सिर की गर्मी शान्त होती है। स्मरण शक्ति बढ़ने लगती है। बाल झड़ने बन्द हो जाते हैं और लम्बे समय तक बाल काले बने रहते हैं, ऐसे प्रत्यक्ष परोक्ष अनेक लाभ होते हैं। नेति करते समय हमेशा मुँह खोलकर ही श्वसन क्रिया करनी चाहिए अन्यथा नासिका में शिवाम्बु ऊपर चढ़ सकता है, जिससे चक्कर आने की संभावना रहती है। नेति के पश्चात् कपाल भांति व भस्त्रिका प्राणायाम अवश्य करना चाहिये। जिससे नाक पूर्ण रूप से साफ हो जाये।

नाक से शिवाम्बु पान-

यदि नासिका द्वारा स्वमूत्र पान किया जाय तो बुद्धि निर्मल होती है। आंखों की ज्योति बढ़ती है। सिर के बाल वृद्धावस्था से पूर्व सफेद नहीं होते। दमा, खांसी, जुकाम आदि श्वसन रोगों में शीघ्र लाभ मिलता है। प्रारम्भ में नाक से शिवाम्बु पीने में कठिनाई का अनुभव अवश्य होता है। अतः पहले कुछ दिनों तक उसे नाक में खींचना चाहिए। धीरे-धीरे अभ्यास हो जाने पर एक बार में विसर्जित होने वाला सारा मूत्र नाक से ही पीना चाहिए।

मूत्र का एनिमा-

पाचन संबंधी सभी रोगों में विशेषकर कब्जी, गैस, बुखार, जुकाम आदि श्वसन रोगों में एनिमा से शीघ्र लाभ होता है। एनिमा बिना किसी औषधि मलद्वार से मल बाहर निकाल देता है। शिवाम्बु लंघन के साथ जब तक आतें पूर्ण रूप से स्वच्छ न हो जाये शिवाम्बु का एनिमा नियमित लेने से रोग में तीव्र गति से सुधार होने लगता है। एनिमा के लिए रोगी का मूत्र कम पड़े तो अन्य स्वस्थ व्यक्ति का मूत्र उपयोग में लिया जा सकता है। स्वस्थ व्यक्ति को भी सप्ताह में एक बार

एनिमाले लेना चाहिए ताकि उसका पाचन तंत्र सक्रिय रहे।

शिवाम्बु के बाह्य प्रयोग

शिवाम्बु मसाज-

किसी भी घाव, फोड़ा, गांठ, जली हुई त्वचा एवं सूजन आदि को छोड़ अन्य रोगों में शिवाम्बु मसाज करना चाहिए है जो उपचार को अधिक प्रभावशाली बना देती है। मसाज हेतु जितना पुराना शिवाम्बु हो उतनी ही अधिक मसाज गुणकारी होती है। पुराना होने से शिवाम्बु में क्षारीय तत्व बढ़ने लगते हैं। जो मूत्र में उपलब्ध यूरिया को अमोनिया में बदल देते हैं। जिसके कारण मालिश करने पर शिवाम्बु त्वचा के सूक्ष्म छिद्रों में प्रवेश कर अन्दर उपस्थित विजातीय तत्वों को शरीर से बाहर निकाल देता है। हथैली और पगथली में आगे पीछे मसाज करने के पश्चात् सुजोक अथवा रिफ्लेक्सोलोजी के संवेदनशील केन्द्रों पर एक्युपेशर उपचार करने से उसका परिणाम शीघ्र मिलने लगता है। सिर पर मसाज करने से गंजापन दूर हो जाता है और समय से पूर्व काले बाल सफेद नहीं होते।

शिवाम्बु मालिश से होने वाली प्रतिक्रियाएँ-

मालिश से खुजली, फुन्सियाँ, उल्टी, दस्त, बुखार, सर्दी, कफ आदि कोई भी प्रतिक्रिया हो सकती है। ऐसी प्रतिक्रियाएँ सभी को नहीं होती। यह प्रतिक्रिया शरीर में जमा जहरीले तत्वों को बाहर निकालने के लिए होती है, उससे घबराना नहीं चाहिए। दो-चार दिनों में वे स्वयं ही अच्छी हो जाती हैं। इस दौरान मालिश को चालू रखनी चाहिए। फोड़े, फुन्सी, छाले पर मालिश नहीं करनी चाहिए। उन पर मूत्र से भीगी हुई कपड़े की पट्टियाँ रखनी चाहिए। जब वे ठीक हो जायें तब मालिश करें।

शिवाम्बु की पट्टियाँ द्वारा उपचार-

पुराने घावों में मांसपेशियों के सड़ने की जो प्रक्रिया होती है, दुर्गन्ध आती है, शिवाम्बु से साफ करने एवं उसकी पट्टी करने से वह बंद हो जाती है, क्योंकि शिवाम्बु प्रभावशाली एण्टीसेप्टिक है। जहाँ शिवाम्बु मसाज नहीं कर सकते अथवा सहज रूप से नहीं हो सकती, शरीर के ऐसे भाग पर शिवाम्बु से भीगी हुई पट्टियाँ रख कर रोगोपचार किया जा सकता है। जैसे घाव, जली हुई त्वचा, फोड़े-फुन्सियाँ, सूजन, शरीर में विजातीय तत्वों से उत्पन्न गांठ आदि स्थानों पर शिवाम्बु से भीगी पट्टियाँ रखकर उपचार करना चाहिए। इससे बाह्य वायरस शरीर के अन्दर प्रवेश नहीं कर सकते। जैसे ही पट्टियाँ सुखने लगे उन्हें पुनः गिला करना चाहिए। बवासीर पर भी शिवाम्बु से भिगोया हुआ कपड़ा रखने से बवासीर रोग ठीक होता है। यदि रोगी के शरीर पर सूजन हो एवं उसको पर्याप्त मात्रा में मूत्र न आता हो तो रोगी के पेड़ू पर यथाविधि मूत्र पट्टी सतत रखी जावे तो मूत्र पर्याप्त मात्रा में आने लगता है तथा सूजन दूर होने लगती है।

अनावश्यक विजातीय तत्वों के शरीर से अलग हो जाने पर पुराने रोग नियन्त्रण में आने लगते हैं एवं व्यक्ति स्वस्थ होने लगता है। पुराना शिवाम्बु उपलब्ध न हो तो ताजे शिवाम्बु को भी

उबालकर ठण्डा कर काम में लिया जा सकता है। शिवाम्बु की मालिश पूरे शरीर में हृदय की दिशा में करनी चाहिए। शिवाम्बु की मालिश से शरीर को पोषण मिलता है। रक्तचाप बढ़ने के बावजूद हृदय एवं गुर्दा पर दबाव नहीं पड़ता एवं उपवास करने में आसानी रहती है। मालिश से रक्त की शुद्धि होती है। शरीर के सभी अंग सक्रिय होने लगते हैं। त्वचा मुलायम होती है। चेहरे पर झुरियाँ नहीं पड़ती। निष्क्रिय कोशिकाएँ सक्रिय होने लगती हैं। शरीर में वात, पित्त, कफ की विकृतियाँ दूर होती हैं।

विविध चिकित्साओं के साथ शिवाम्बु का प्रयोग-

हथेली और पगथली में शिवाम्बु का मर्दन करने से वहाँ जमें विकार अपना स्थान छोड़ने लगते हैं। अतः उसके पश्चात् किया गया एक्युप्रेशर उपचार, अधिक प्रभावशाली हो जाता है। शिवाम्बु को चुम्बक पर रखने से उसमें चुम्बकीय गुण, रंगीन बोतलों में धूप में रखने से अथवा अन्य विधि द्वारा रंगों की प्रकाश किरणों डालने से रंगों के गुण, पिरामिड पर रखने से, मंत्रोपचार द्वारा भावित करने से, एनर्जी स्टीक घूमाने अथवा स्फटिक के पास रखने से, उसमें अतिरिक्त ऊर्जा का संचय होने से उसकी प्रभावशालीता बढ़ जाती है। यदि रोगी की नाभि अपने केन्द्र में नहीं हो तो किसी भी विधि द्वारा उसको केन्द्र में लाने को प्राथमिकता देनी चाहिए। उसी प्रकार यदि रोगी के दोनों पैर बराबर न हो। एक पैर लंबा और दूसरा छोटा हो तो उन्हें बराबर करना चाहिए। रोग की स्थिति में प्रायः रोगी का स्वर तंत्र असंतुलित हो जाता है। अतः जो स्वर अपेक्षाकृत कम चलता है उसको अधिक चलाने हेतु सजगता रखनी चाहिए। शिवाम्बु के उपचार के साथ संयमित-सात्विक खान-पान के प्रति सजगता रखने, सम्यक् चिन्तन-मनन, स्वाध्याय, भक्ति, प्रार्थना करने, सदसाहित्य पढ़ने एवं सकारात्मक सोच से शिवाम्बु उपचार और अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

शिवाम्बु से होने वाले तात्कालिक उपचार एवं अन्य उपयोग-

शिवाम्बु उपचार करते समय यदि कुछ भी प्रतिकूल प्रतिक्रिया हो तो अनुभवी शिवाम्बु चिकित्सकों से ही परामर्श लेना चाहिए न कि अन्य उपचार पद्धतियों के चिकित्सकों से। हो सकता है वह प्रतिक्रिया उपचार का शुभ संकेत हो। शिवाम्बु उपचार करते समय यथा संभव हमें दुर्व्यसनों के सेवन का और उन सभी कारणों से बचना चाहिए, जिससे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती हो। साथ ही भोजन, पानी, हवा एवं सूर्य के प्रकाश जैसे अमूल्य प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक सम्यक् उपयोग करना चाहिए। जिससे शिवाम्बु उपचार से विभिन्न रोगों में शीघ्र परिणाम आने लगते हैं।

1. हिलते हुए दांतों को पुनः मजबूत करने के लिये तथा दांतों संबंधी अन्य रोगों में ताजे शिवाम्बु को मुँह में भरकर दिन में तीन-चार बार पंद्रह से बीस मिनट तक घुमाने से अधिकांश दांतों के रोग ठीक हो जाते हैं।
2. आंखों के सभी रोगों में, नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए, चश्मों के नम्बर कम करने के लिए,

रोजाना तीन-चार बार आंखों को ताजे शिवाम्बु को तीन-चार मिनट ठंडा होने के पश्चात् आई कप से धोने, साथ ही नाक से नेति एवं नाक से शिवाम्बु पीने से चमत्कारी परिणाम आते हैं।

3. यदि रोगी का पेशाब बंद हो तो, अन्य स्वस्थ व्यक्ति का शिवाम्बु पिलाने से मूत्र में आया अवरोध दूर हो जाता है। उसके पश्चात् रोगी अपने स्वयं के शिवाम्बु का सेवन कर सकता है।
4. सांप, बिच्छु अथवा शरीर में अन्य किसी भी प्रकार का जहर फैलने पर शिवाम्बु पीने से विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।
5. बच्चों को शिवाम्बु पिलाने से उनको चेचक, पोलियो, डी.पी.टी., हेपेटाईस जैसे टीकों के लगाने की आवश्यकता नहीं होती और न टीकों के दुष्प्रभावों का खतरा ही रहता है।
6. सभी असाध्य रोगों में चाहे कैंसर हों अथवा एड्स या एंथ्रैक्स शरीर की प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाने हेतु शिवाम्बु का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, जो शिवाम्बु के चमत्कारी प्रभावों का प्रतीक है। जिस प्रकार चूने की डली पर पानी डालने से वह बिखरती है उसी प्रकार कैंसर की गठनों शिवाम्बु के सम्पर्क में आकर बिखरने लगती है जो सब मल के साथ बाहर निकलने लगती है। अतः इस विधि में किसी भी प्रकार के रोग में शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं होती।
7. शिवाम्बु सर्वोत्तम एन्टीबायोटिक, सेविंग क्रीम, सेविंग का साबुन, सेविंग लोशन, बालों को मुलायम बनाने वाला शैम्पू, दांतों को साफ करने वाला दंत मंजन है। इसी कारण विदेशों में सौंदर्य प्रसाधनों तथा दंत मंजनों में शिवाम्बु का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। आज सौंदर्य प्रसाधन के नाम पर जीवों पर जो निर्दयता, क्रूरता, हिंसा हो रही है उन सबका शिवाम्बु एकमात्र सस्ता, सुन्दर, प्रभावशाली दुष्प्रभावों से रहित अहिंसक विकल्प है।
8. विदेशों में सौंदर्य प्रसाधन, विलास की सामग्री, वस्त्रों को डाई करने में मूत्र का प्रयोग होता है। इंग्लैण्ड के रसायन विशारदों ने मूत्र के क्षारों से श्रेष्ठ प्रकार के नहाने के साबुन तथा कीमती क्रीम तैयार किए हैं। अमेरिका के श्री जे.एन.लिलेज ने अपनी पुस्तक "दी आर्ट ऑफ क्राँप्ट एण्ड डाइंग में लिखा है कि काटन, लिनन, सिल्क एवं ऊन के फैंब्रिक्स की मूत्र द्वारा डाइ करने से रंग धूप में रगड़ने से या धोने से नहीं छूटता और कुछ रसायन मिलाने से कई अच्छे चमकदार रंग डाई की जाती है।
9. उषापान करने वालों को प्रातः प्रथम शिवाम्बु का पान करना चाहिए। उसके कुछ समय पश्चात् उषापान कर पेट का हलका व्यायाम करने से अथवा मूल और उड्डायन बंध लगाने से आंतों की सफाई प्रभावशाली ढंग से हो जाती है।
10. शिवाम्बु विषनाशक एवं रोग प्रतिकारात्मक क्षमता होने के कारण मूत्र चोट, घाव, जलने एवं चर्म रोग में प्रभावकारी उपचार प्रदान करता है। प्रभावित अंग पर बाहर से लगाने पर यह खून बहना बंद कर देता है, दर्द मिटाता है एवं तेजी से घाव भरता है। स्वमूत्र से अच्छे

हुए घावों में निशान नहीं रहते।

11. श्वसन संबंधी रोगों में स्वमूत्र नाक द्वारा पीने से रोग तो दूर होता ही है, प्रदूषित वायु के दुष्प्रभाव का प्रतिकूल असर पड़ने की संभावना क्षीण हो जाती है। शुरु में नाक से मूत्र पीने में कठिनाई का अनुभव अवश्य होगा। इसलिए पहले नाक से कुछ दिनों तक खींचना चाहिए। धीरे-धीरे अभ्यस्त हो जाने पर एक वक्त का मूत्र नाक से ही पीने का प्रयास करें।
12. शिवाम्बु के क्षारीय गुण होने से कपड़े धोने में शिवाम्बु का उपयोग साबुन अथवा सोडे के विकल्प के रूप में भी हो रहा है।

शिवाम्बु के प्रति जनजागरण

सहज और गुणकारी, आरोग्य का साधन शिवाम्बु अपने अन्दर रखते हुए उससे हम उसी प्रकार वंचित हैं जैसे हमारे अन्दर में परमात्मा मौजूद है और हम उससे अपरिचित रहते हैं। हिरन की नाभि में कस्तूरी होती है, परन्तु उसे उसका मालूम नहीं होता। आज का मानव सम्यक् चिन्तन के अभाव में, भीड़ और भ्रामक विज्ञापनों से प्रभावित हो अपनी असजगता, अज्ञान अथवा अधूरे ज्ञान के कारण आधुनिक चिकित्सा पर अन्धःश्रद्धा करता है। विज्ञान के नाम पर अनुभूत सत्य को झुठलाने का प्रयास हो रहा है। असत्य सत्य पर हावी हो रहा है। परन्तु ऐसा कभी स्थायी रूप से हो नहीं सकता। एक छोटा सा दीपक सघन अंधकार में प्रकाश कर सकता है, एक चिनगारी हजारों टन कचरे को जला सकती है। स्वास्थ्य मंत्रालय के नीतियाँ और वर्तमान में जनसाधारण की मानसिकता भले ही शिवाम्बु के प्रतिकूल हो, स्वार्थी तत्त्व शिवाम्बु के संबंध में कितना ही मिथ्या प्रचार क्यों न करते हों, शिवाम्बु की गुणवत्ता को नकारा नहीं जा सकता। आवश्यकता है शिवाम्बु प्रेमियों के दृढ़ मनोबल की ताकि वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप उपलब्ध समय, श्रम एवं साधनों का शिवाम्बु के प्रति जागृति पैदा करने में सदुपयोग कर सकें।

परिस्थितियाँ किसी भी युग में शत-प्रतिशत अनुकूल नहीं होती। राम के युग में रावण और कृष्ण के युग में कंस का होना इसी बात का प्रतीक है। मौत से लड़ा जा सकता है, भागा नहीं जा सकता। समस्याओं का समाधान किया जा सकता है, उन्हें टाला नहीं जा सकता। कठिनाइयों का सामना किया जा सकता है, उन्हें रोका नहीं जा सकता। अतः मानवतावादी दृष्टिकोण वाले सभी स्वास्थ्य प्रेमियों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि, जन-जन तक शिवाम्बु सम्बन्धी जानकारी पहुँचावे तथा गरीब, अशिक्षित स्वास्थ्य प्रेमियों को रोग मुक्त जीवन व्यतीत करने के पुनीत सेवा कार्य में अपनी अहं भूमिका निभाए।

चंद प्रभावशाली उपचार

1. शरीर के जो अंग कमजोर हों, जिस स्थान पर सूजन, जलन, खुजली, दर्द अथवा विजातीय तत्वों के जमा हो जाने के कारण रक्त और प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध आ गया हो, उस स्थान पर दाणा मेथी का शरीर पर कुछ समय तक स्पर्श कराने से संबंधित समस्याओं में तुरन्त राहत मिलने लगती है।
2. लगभग एक चम्मच सूर्यमुखी तेल को दिन में 2-3 बार 15 से 20 मिनट मुंह में अन्दर ही अन्दर घुमाकर थूकने से रक्त विकार से संबंधित सभी प्रकार के रोग चन्द दिनों में ही दूर हो जाते हैं तथा हड्डियां और दांत मजबूत होने लगते हैं। जोड़ों के दर्द ठीक हो जाते हैं।
3. यदि नाभि अपने स्थान से अन्दर की तरफ हो जाए, उस व्यक्ति का वजन दिन प्रतिदिन घटता चला जाता है और यदि किसी कारण नाभि अपने स्थान से बाहर की तरफ हो जाती है तो शरीर का वजन न चाहते हुए भी अनावश्यक बढ़ने लगता है। किसी कारण नाभि यदि अपने स्थान से ऊपर की तरफ चढ़ जाती है तो खट्टी डकारें, अपच आदि की शिकायतें रहने लगती हैं। कब्जी हो सकती है। परन्तु यदि नाभि अपने स्थान से नीचे की तरफ चली जाती है तो दस्तों की शिकायत हो जाती है। इसी प्रकार नाभि कभी दायें, बायें, अथवा तिरछी दिशाओं में भी हट जाती है, जिससे शरीर में अनेक प्रकार के रोग होने लगते हैं। सारे परीक्षण एवं पैथालोजिकल टेस्ट करने के पश्चात् भी यदि रोग पकड़ में नहीं आता है तो ऐसे में नाभि केन्द्र को अपने केन्द्र में लाने से रोग में तुरन्त राहत मिलने लग जाती है।



4. नमस्कार मुद्रा में गोदुआसन में बैठकर दिन में पांच सात बार दीर्घ स्वर में ओम् अथवा नमस्कार मंत्र के एक एक पद का कुछ समय तक उच्चारण करने से मेरूदण्ड, मस्तिष्क एवं नाड़ी संस्थान संबंधी रोगों में चन्द दिनों में ही चमत्कारी परिणाम आते हैं।

5. शरीर के प्रत्येक अंग उपांग की मांसपेशियों को जितना संभव हो आगे-पीछे, दायें-बायें, ऊपर-नीचे घुमाने, खींचने, दबाने, सिकोड़ने और फैलाने से संबंधित अंग की मांसपेशियां सजग और सक्रिय हो जाने से, उस भाग में रक्त परिभ्रमण नियमित होने लगता

है। आंख, कान, नाक, मुंह, गला और शरीर के मुख्य जोड़ों के अंग व्यायाम से वहां पर प्राण ऊर्जा का प्रवाह बराबर होने लगता है।

स्वर चिकित्सा - जब रोग का कारण समझ में न आए अथवा रोग की असहनीय स्थिति हो, चिकित्सक उपलब्ध न हो, ऐसे आफतकालीन समय जो स्वर चल रहा है उसको बदली कर विपरीत स्वर चलाने से कुछ समय पश्चात् ही रोग का प्रभाव कम होने लगता है।



Dr. C.M. Chordia(B.E.Elec.)
Consultant for Various
Effective Drugless Self
Reliant Therapies

Managing Trustee	: KalyanMal Chanchal Mal Chordia Trust
	: Smt. Ratan Kanwar Chanchal Mal Chordia Charitable Trust
Acting Chairman	: Prani Mitra Sansthan
Ex. Convener	: All India S.S. Jain Swadyaya Sangh, Jodhpur
Patron	: M.B.M. Engineering College Alumini Association
Ex. Chairman	: Mahaveer International, Jodhpur
Address	: 'Chordia Bhawan' O/s Jalori gate, Gole Building Road, Jodhpur-342003 (Raj.)
Phone	: 0291-2621454(R), 94141-34606(M), Fax: 2435471

अच्छे स्वास्थ्य हेतु रोग प्रतिरोधक क्षमता आवश्यक

मानव अनन्त शक्तिशाली प्राणी है। उसमें अनन्त क्षमता और ऊर्जा होती है। जिस प्रकार लाखों चूहे मिलकर किसी शेर को परेशान नहीं कर सकते, उसी प्रकार यदि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी हो तो वायरस और कीटाणु उसका क्या बिगाड़ सकते हैं? यदि शेर को अपनी क्षमता पर विश्वास न हो, वह प्रमाद और आलसी या गहरी निद्रा में असजगता से सोया हुआ हो तो निश्चित रूप से चूहे उसको परेशान कर सकते हैं। जागृत अवस्था में वे उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। शरीर की प्रतिकारात्मक शक्ति रोगों से हमारी रक्षा करती है। वह शक्ति क्यों क्षीण होती है उसको क्षीण करने में गर्भावस्था से ही ली जाने वाली आधुनिक दवाइयां, इंजेक्शन और टीकाकरण के दुष्प्रभावों की अहं भूमिका होती है। जिनकी प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होती है, उसका वायरस और बैक्टीरिया कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, अर्थात् वायरस उस व्यक्ति को रोगी नहीं बना सकता।

PRINTED-BOOKS

Posted Under Department of Posts Inland Postal Rates SL 9 No. B, Book Packet
Containing Printed Books Requires Rs. 1 Postage for Weight upto 100 grams

To

CHANCHALMAL CHORDIA

Chordia Bhavan, O/s Jalori Gate, Gole Building Road,
Jodhpur 342003 (Raj.) Ph. 0291-2621454, Fax : 02435471
Mob. 9414134606, E-mail : cmchordia.jodhpur@gmail.com

website : www.chordiahealthzone.in, www.chordiahealthzone.com